

द्वितीय अंक
निफ्ट कांगड़ा हिंदी ई-पत्रिका
जुलाई 2025 से जून 2026



गिरि संवाद

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा
(वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादक

डॉ. राजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक और परिसर समन्वयक
फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग

सम्पादक

श्री शिवा ए राजा
सहायक प्राध्यापक
फैशन संचार विभाग

सह-सम्पादक

श्रीमती रीतु रानी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

केंद्र संसाधन प्रतिनिधि

डॉ. बबीता भंडारी
सहायक प्राध्यापक
वस्त्र डिज़ाइन विभाग

डिज़ाइन मंडल

मुख्य डिज़ाइनर

श्री अनिल कुमार तिकी
सहायक प्राध्यापक
फैशन और जीवनशैली उपकरण विभाग

डिज़ाइनर

श्रीमती दीप शिखा वालिया
सहायक प्राध्यापक
फैशन संचार विभाग

डिज़ाइन और चित्रण

गौरी दीक्षित
छात्रा
फैशन संचार विभाग, 2024-2028

श्रद्धा राय

छात्रा
फैशन संचार विभाग, 2024-2028

समन्वय दल

समन्वयक - प्रशासनिक

श्री अशोक कुमार
प्र० सहायक

समन्वयक - सम्पादकीय

श्री देवेन्द्र कुमार
प्र० सहायक

निफ्ट कांगड़ा हिंदी ई-पत्रिका, गिरिसंवाद, द्वितीय अंक,
जुलाई 2025 से जून 2026

संपर्क:-
हिंदी विभाग,
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान,
छेब, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

Cover illustration: Corporate Communication Cell, HO

विषयसूची

02 शुभेच्छा

निदेशक की कलम से
हिंदी नोडल अधिकारी की कलम से
प्रधान सम्पादक की कलम से
सम्पादक की कलम से

06 निफ्ट कांगड़ा द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन संबंधी रिपोर्ट

11 मुख्य परिसर गतिविधियाँ

निफ्ट कांगड़ा एक नज़र
हैंडलूम पखवाड़ा-2025: भारतीय हथकरघा विरासत का रचनात्मक उत्सव
79वां स्वतंत्रता दिवस एवं 'हर घर तिरंगा' अभियान-2025
एनआईएफटी कांगड़ा में जन्माष्टमी उत्सव
विश्व फोटोग्राफी दिवस पर फोटोग्राफी प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता
गणेश चतुर्थी महोत्सव
राष्ट्रीय खेल दिवस पर तीन दिवसीय खेल समारोह
शिक्षक दिवस समारोह
ओणम उत्सव में झलकी केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत
नवरात्रि उत्सव में दिखे संस्कृति और उत्सव के रंग
स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत विविध जागरूकता एवं स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा में 11वें दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों ने प्राप्त की डिग्रियाँ
पूर्व छात्र सम्मेलन (एलुमनी मीट) 2025 में साझा हुए अनुभव
वार्षिक उत्सव 'स्पेक्ट्रम-2026' में दिखा रचनात्मकता और संस्कृति का संगम
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान आयोजितस्वच्छता पखवाड़ा-2026 के अंतर्गत विविध स्वच्छता एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन
शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला-2026 में पारंपरिक शिल्प और नवाचार का संगम
ग्रेजुएशन शो-2026 में उभरी नवाचार और युवा रचनात्मक प्रतिभा
फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग द्वारा चार दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

21 निफ्ट कांगड़ा परिवार से

48 यादों के झरोखे से

शुभेच्छा



निदेशक की कलम से

प्रिय पाठकों,

सप्रेम नमस्कार।

परिसर की वार्षिक पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी “गिरिसंवाद (हिंदी ई-पत्रिका)” का द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा चुका है। यह केवल एक प्रकाशन ही नहीं, बल्कि इसने हमारी सांस्कृतिक विरासत, रचनात्मकता और बौद्धिक विचारों का दर्पण प्रस्तुत किया है। पत्रिका के इस प्रकाशन में समाहित सभी लेख, कविता, विचार और रचना, इस संस्थान के शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों की अभिव्यक्ति का सजीव रूप है। गिरिसंवाद पत्रिका की भाषा राजभाषा को समर्पित है।

हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि यह हमारी पहचान, संवेदना और संवाद की आत्मा भी है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल भाषा के प्रति सम्मान व्यक्त कर रहे हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी हिंदी साहित्य और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इसके साथ ही मैं इस पत्रिका के द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल, प्राध्यापकगण, विद्यार्थियों तथा अन्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयास और रचनात्मक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप इस पत्रिका को साकार रूप प्रदान किया जा सका है।

आशा है कि हमारा परिसर शिक्षा, अनुसंधान और उत्कृष्टता के क्षेत्र में निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता रहेगा। हमारी “गिरिसंवाद (हिंदी ई-पत्रिका)” का यह द्वितीय संस्करण सभी पाठकों को पसंद आएगा और इस पत्रिका की शृंखला चलती रहेगी और आप इससे लाभान्वित होंगे।

सप्रेम,

प्रो. डॉ. राहुल चंद्रा

निदेशक

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा

शुभेच्छा



हिंदी नोडल अधिकारी की कलम से

प्रिय पाठकों,

सप्रेम नमस्कार।

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, संवेदनाओं, विचारों और मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हिंदी हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधतापूर्ण भारतीय समाज को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। यह भाषा जन-जन से जुड़ी होने के साथ-साथ ज्ञान, साहित्य, विज्ञान, प्रशासन और संचार के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है।

‘गिरिसंवाद’ के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता है। यह प्रयास न केवल रचनात्मक अभिव्यक्तियों को एक मंच प्रदान करता है, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति रुचि, सम्मान और प्रयोग को भी प्रोत्साहित करता है। ऐसे प्रकाशन संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को सामने लाने तथा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हिंदी, भारत की संपर्क एवं अभिव्यक्ति की प्रमुख भाषाओं में से एक है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी, देवनागरी लिपि में, संघ की राजभाषा है। हिंदी का महत्व केवल राजभाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि साहित्य, शिक्षा, संस्कृति, मीडिया और जनसंचार की प्रभावशाली भाषा के रूप में भी निरंतर बढ़ रहा है। इसी कड़ी में निफ्ट कांगड़ा द्वारा भी पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन कर एक सूक्ष्म पहल की है। आज आवश्यकता है कि हम हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिक अवसरों तक सीमित न रखते हुए अपने दैनिक कार्य-व्यवहार में भी सहजता और गर्व के साथ करें।

‘गिरिसंवाद’ इसी भावना को आगे बढ़ाने का एक सार्थक प्रयास है। इसमें प्रकाशित रचनाएँ हमारी सोच, अनुभवों और सृजनात्मकता का प्रतिबिंब हैं। आशा है कि इसका द्वितीय संस्करण पाठकों को नई दृष्टि, नए विचार और रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा तथा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण के निर्माण में योगदान देगा। मैं इस महत्वपूर्ण पहल के लिए संपादकीय टीम, रचनाकारों एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को अपने कार्य और व्यवहार का सहज हिस्सा बनाएं तथा “हिंदी से जुड़ें, हिंदी को बढ़ाएँ” के संकल्प को साकार करें।

सादर,

दीपक राणा

संयुक्त निदेशक और हिंदी नोडल अधिकारी
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, काँगड़ा

संपादकीय



प्रधान सम्पादक की कलम से

प्रिय पाठकगण,

शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होते, वे मनुष्य के भीतर घटित हो रही अनकही अनुभूतियों के साक्षी भी होते हैं। विचार जब शब्दों का रूप लेते हैं, तो वे केवल पढ़े नहीं जाते, बल्कि महसूस किए जाते हैं। इसी विश्वास के साथ निफ्ट कांगड़ा हिंदी ई-पत्रिका के द्वितीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता हो रही है।

पिछले अंक से आरम्भ हुई यह यात्रा अब एक ऐसे मंच का रूप ले रही है, जहाँ विचार, संवेदनाएँ, अनुभव और भावनाएँ सहजता से अपनी अभिव्यक्ति पा रही हैं। इस पत्रिका की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि मेरे लिए यही है कि इसके माध्यम से हमारे अनेक सहकर्मियों और लेखकों ने अपने मन के उन भावों को शब्द दिए हैं, जो प्रायः कार्यालयीन दिनचर्या, दायित्वों और औपचारिक संवादों के बीच अनकहे रह जाते हैं। हमारी रोज़मर्रा की व्यावसायिक पहचान के पीछे भी एक संवेदनशील मन, व्यक्तिगत अनुभवों का संसार और अनेक अनकही कहानियाँ होती हैं—यह पत्रिका उन्हीं अनकहे पक्षों को स्वर देने का एक विनम्र प्रयास है।

इस द्वितीय अंक में निफ्ट कांगड़ा की महत्वपूर्ण गतिविधियों और उल्लेखनीय घटनाक्रमों के साथ-साथ समकालीन विषयों पर केन्द्रित विचारोत्तेजक एवं चिंतनपरक आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। मैं आशा करता हूँ कि इस अंक की रचनाएँ आपको केवल एक पाठक के रूप में नहीं, बल्कि एक सहयात्री और सहभागी के रूप में भी जोड़ेंगी। हो सकता है, किसी कविता में आपको अपना कोई अनकहा भाव दिखाई दे, किसी आलेख में कोई नया प्रश्न मिले, किसी संस्मरण में कोई पुरानी स्मृति जाग उठे या किसी अनुभव में आपको अपनी ही कहानी की झलक मिल जाए।

आइए, शब्दों की इस यात्रा को केवल पढ़ें नहीं—इसे महसूस करें, इससे संवाद करें और इसे आगे बढ़ाएँ।

आप सभी लेखकों, रचनाकारों, सहयोगियों और पाठकों के प्रति हृदय से आभार, जिनके सामूहिक प्रयासों से निफ्ट कांगड़ा हिन्दी ई-पत्रिका निरंतर एक जीवंत, संवेदनशील और विचारशील मंच के रूप में विकसित हो रही है।

आपका स्नेह, सुझाव और सहभागिता इस यात्रा की वास्तविक शक्ति है।

सादर

डॉ. राजीव कुमार
प्रधान सम्पादक,
निफ्ट कांगड़ा हिंदी ई-पत्रिका
(सो प्राध्यापक और परिसर समन्वयक
फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग)

संपादकीय



सम्पादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

हिन्दी हमारे लिए केवल एक भाषा नहीं, बल्कि अपनेपन और जुड़ाव की भाषा है। इसमें कही गई बातें अक्सर दिल के थोड़ा और करीब महसूस होती हैं। इसी अपनत्व की भावना के साथ हमारी यह हिन्दी पत्रिका आपके सामने है।

हमारा परिसर केवल कक्षाओं, कार्यालयों और गतिविधियों का स्थान नहीं है; यह विचारों, अनुभवों, हँसी-मुस्कान, रचनात्मकता और आपसी सीख का एक छोटा-सा परिवार है। इस परिवार के हर सदस्य के पास कहने के लिए कुछ न कुछ अपना है—कोई अनुभव, कोई विचार, कोई कविता, कोई संस्मरण या कोई रचनात्मक अभिव्यक्ति। इस पत्रिका के माध्यम से हमने इन्हीं छोटी-बड़ी अभिव्यक्तियों को हिन्दी में एक साथ लाने का प्रयास किया है।

आज जब हमारे आसपास संवाद के अनेक माध्यम और भाषाएँ हैं, ऐसे समय में हिन्दी को अपने दैनिक कार्यों, विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्ति का हिस्सा बनाना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। हिन्दी का प्रयोग केवल राजभाषा के रूप में नहीं, बल्कि अपनी बात कहने, दूसरों को सुनने और आपस में जुड़ने के माध्यम के रूप में भी हो—यही इस पत्रिका का छोटा-सा प्रयास है। हिन्दी की खूबसूरती ही यही है कि यह सरल शब्दों में भी भावनाओं को बहुत सहजता से व्यक्त कर देती है।

आशा है कि यह पत्रिका आपको अपने परिसर की कुछ परिचित झलकियाँ, कुछ नए विचार और हिन्दी से जुड़ाव की एक सुखद अनुभूति देगी।

पढ़िए, जुड़िए और हिन्दी में अपनी बात कहने का आनंद लीजिए।

सप्रेम,

सम्पादक
हिन्दी पत्रिका
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा

निफ्ट कांगड़ा द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), कांगड़ा के हिंदी अनुभाग द्वारा दिनांक 5 जनवरी 2026 को परिसर में एक दिवसीय निफ्ट राजभाषा सम्मेलन का आयोजन हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रभावी कार्यान्वयन के उद्देश्य से किया गया।

राजभाषा सम्मेलन का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। निफ्ट कांगड़ा के निदेशक महोदय ने राजभाषा सम्मेलन में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया और निफ्ट के अन्य परिसरों से ऑनलाइन माध्यम से जुड़े सभी निदेशक एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि आज की भागदौड़ वाली जीवन शैली में कार्य के साथ-साथ आध्यात्म की भी आवश्यकता है। हमें हिंदी के लिए हर संभव छोटे से छोटा प्रयास करना चाहिए।

सम्माननीय अतिथि के रूप में निफ्ट मुख्यालय के निदेशक श्री गौरव मिश्रा उपस्थित रहे। उन्होंने राजभाषा हिंदी की उत्पत्ति, उसके व्यावहारिक प्रयोग और प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने संबोधन में उन्होंने राजभाषा हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसकी संवैधानिक स्थिति तथा प्रशासनिक कार्यों में इसके व्यावहारिक प्रयोग और राज्यों का गठन, भाषा के आधार पर देश के पहले राज्य के गठन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति की भाषा नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रशासन और व्यवसाय की भी सशक्त भाषा बन चुकी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि हमें हिंदी में संवाद करने की पहल करनी चाहिए तो सामने वाला भी हिंदी में संवाद करने लगता है, हिंदी को अनावश्यक रूप से जटिल बनाने के स्थान पर उसे सहज, सरल और प्रभावी बनाए रखने की आवश्यकता है।

सम्मेलन के प्रथम सत्र में 'हिंदी: कल, आज और कल' विषय पर दैनिक जागरण, कांगड़ा (हि.प्र.) के राज्य संपादक श्री नवनीत सिंह ने सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी को कृत्रिम रूप से बोझिल बनाना उसकी स्वाभाविक शक्ति को कमजोर करता है। अकारण विशेषणों और क्लिष्ट शब्दों की फिजूलखर्ची से बचना चाहिए। अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी को व्यवहार की भाषा बनाए बिना उसके प्रचार-प्रसार के प्रयास अधूरे रहेंगे। पत्रकारिता, सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों की भूमिका पर चर्चा करते हुए उन्होंने हिंदी के सरल, जनोन्मुखी और संप्रेषणीय स्वरूप पर बल दिया। अपने वक्तव्य में श्री नवनीत सिंह ने यह भी रेखांकित किया कि वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के दौर में हिंदी की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। हिंदी में तकनीकी शब्दावली का विकास, अनुवाद की गुणवत्ता तथा प्रशासनिक लेखन में स्पष्टता, ये सभी ऐसे पक्ष हैं, जिन पर सतत कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

मध्याह्न भोजन के उपरांत आयोजित द्वितीय सत्र में केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.) के हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. मलकीयत सिंह ने 'संघ की राजभाषा नीति: प्रावधान एवं अपेक्षाएं' विषय पर विस्तार से अपना आख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने संविधान में निहित राजभाषा संबंधी प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, नियमों तथा उनके कार्यान्वयन की व्यावहारिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजभाषा केवल आदेशों और परिपत्रों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह कार्यालयीन व्यवहार, कार्य-व्यापार और संप्रेषण की स्वाभाविक भाषा बननी चाहिए। डॉ. मलकीयत सिंह ने राजभाषा, व्यवहार की भाषा और काव्य अथवा साहित्यिक भाषा के बीच के अंतर को सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि कार्यालयीन हिंदी में स्पष्टता, संक्षिप्तता और शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। अनुवाद करते समय भाव, संदर्भ और प्रयोजन का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीक के युग में हिंदी के लिए नए अवसर उपलब्ध हैं। कंप्यूटर, कृत्रिम मेधा, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में सुश्री रिचा खर्कवाल, सहायक निदेशक राजभाषा प्रभारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने मुख्य अतिथि, वक्ताओं, सभी निफ्ट परिसरों सहित सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन निफ्ट के विभिन्न परिसरों के बीच राजभाषा समन्वय को सुदृढ़ करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निफ्ट मुख्यालय से राजभाषा सम्मेलन के आयोजन की उठी लहर अभी तो निफ्ट कांगड़ा तक पहुँची है धीरे-धीरे निफ्ट के सभी परिसरों तक पहुँच जाएगी। इसी के साथ सभी निफ्ट कांगड़ा द्वारा आयोजित एक दिवसीय निफ्ट राजभाषा सम्मेलन का समापन हुआ।

हिंदी पखवाड़ा – 2025 रिपोर्ट

निफ्ट कांगड़ा सरकारी निर्देशों व निफ्ट मुख्यालय की अपेक्षाओं एवं कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु प्रसारित नीति के अनुसार दिनांक 01 सितम्बर से 29 सितम्बर 2025 तक राजभाषा हिंदी पखवाड़े का भव्य आयोजन धूमधाम से किया गया। इस हिन्दी पखवाड़े के दौरान उद्घाटन और समापन समारोह सहित 06 प्रतियोगिताओं जैसे निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, इमला प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद एवं भाषा ज्ञान प्रतियोगिता के गरिमापूर्ण आयोजन किये गए।

समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह

राजभाषा हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह का गरिमापूर्ण भव्य आयोजन दिनांक 29 सितम्बर 2025 को आयोजित हुआ। निदेशक डॉ. राहुल चंद्रा,

संयुक्त निदेशक एवं नोडल हिन्दी अधिकारी, दीपक राणा एवं मुख्य अतिथि डॉ. आशुतोष गुलेरी, प्रशासक, कायाकल्प केंद्र, पालमपुर की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह के पखवाड़े में आमंत्रित निर्णायक मंडल के सदस्यों को हिन्दी आभार प्रदान करके उनका आभार व्यक्त किया।

30 सितम्बर को हिंदी पखवाड़ा समापन के अवसर पर नोडल हिंदी अधिकारी ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई दी। सभी निर्णायक सदस्यों ने समापन समारोह के अवसर पर राजभाषा के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। संस्थान के निदेशक डॉ. राहुल चंद्रा जी ने और संयुक्त निदेशक एवं नोडल हिन्दी अधिकारी, दीपक राणा जी ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार तथा प्रतिभा प्रमाण पत्र दिए तथा संबोधन में पखवाड़े की सफलता पर संस्थान के कर्मचारियों, निर्णायकों एवं विद्यार्थियों को बधाई एवं धन्यवाद दिया।

निफ्ट कांगड़ा निदेशक महोदय जी के निर्देशानुसार राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु एक अनूठे कदम से एक अनूठी पहल की है। यह अनूठी पहल है निफ्ट परिसर के संदर्भ में हिन्दी पत्रिका “गिरिसंवाद” का प्रकाशन। प्रकाशन समिति सदस्यों के कुशल सहयोग एवं निदेशक महोदय के मार्गदर्शन में पत्रिका को सफलतापूर्वक प्रकाशन के अंतिम कदम तक पहुंचाया और हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के पावन अवसर पर पत्रिका का विमोचन किया और निफ्ट कांगड़ा ने राजभाषा से संबंधित उपलब्धि हासिल की।

वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित की गई हिन्दी कार्यशाला

राजभाषा के प्रचार – प्रसार हेतु राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम एवं जांच बिंदुओं के आधार पर प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाना अनिवार्य है। वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित की गई सभी हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनका संक्षेप में विवरण इस प्रकार है:

दिनांक 26.09.2025 को निफ्ट के समस्त सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला

निफ्ट कांगड़ा परिसर में दिनांक 26.09.2025 को 03:00 बजे C 1 ब्लॉक कक्ष संख्या 1 में सक्षम प्राधिकारी के निर्देशानुसार जुलाई-सितंबर 2025 तिमाही हेतु दक्षिण भारत अथवा अहिन्दी भाषी छात्रों के लिए हिन्दी भाषा के मौखिक ज्ञान के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती रितु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निफ्ट कांगड़ा ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता श्री शशि कुमार, हिन्दी प्राध्यापक, ए वी एकेडमी, धर्मशाला का परिचय दिया। कार्यशाला में कुल 14 छात्रों ने भाग लिया। श्रीमती रितु रानी ने स्वागत भाषण में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्य के बारे में बताया तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी छात्रों से कार्यशाला में प्रशिक्षण के बाद अपने कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।

दिनांक 24.12.2025 को निफ्ट के समस्त सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला

निफ्ट कांगड़ा परिसर में दिनांक 24.12.2025 को 03:00 बजे C 1 ब्लॉक कक्ष संख्या 1 में सक्षम प्राधिकारी के निर्देशानुसार अक्टूबर-दिसंबर 2025 तिमाही हेतु *विकसित भारत @ 2047 की परिकल्पना में हिन्दी की भूमिका* पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती रितु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निफ्ट कांगड़ा ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता श्री ध्रुव डोगरा, उप निदेशक, मेरा युवा भारत कांगड़ा, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार का परिचय दिया। कार्यशाला में कुल 33 सदस्यों ने भाग लिया। श्रीमती रितु रानी ने स्वागत भाषण में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्य के बारे में बताया तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों से कार्यशाला में प्रशिक्षण के बाद अपने कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।

दिनांक 27.03.2026 को निफ्ट के समस्त सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला

निफ्ट कांगड़ा परिसर में दिनांक 27.03.2026 को प्रातः 11:30 बजे C 1 ब्लॉक में संयुक्त निदेशक एवं नोडल हिन्दी अधिकारी श्री दीपक राणा जी की अध्यक्षता में आयोजित हिन्दी कार्यशाला के प्रमुख विषय राजभाषा संबंधी कर्तव्य एवं राजभाषा का व्यावहारिक प्रयोग पर चर्चा था। सर्वप्रथम श्रीमती रितु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निफ्ट कांगड़ा परिसर, ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता श्रीमती रजनी, नराकास सचिव, पंजाब नेशनल बैंक, धर्मशाला का परिचय दिया। कार्यशाला में कुल 35 सदस्यों ने भाग लिया। कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने स्वागत भाषण में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने की आवश्यकता के बारे में बताया तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों से कार्यशाला में प्रशिक्षण के बाद अपने कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।

दिनांक 17.06.2026 को निफ्ट के समस्त सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी कार्यशाला

निफ्ट कांगड़ा परिसर में दिनांक 17.06.2026 को 11:00 बजे राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा के सभागार में नराकास धर्मशाला के तत्वाधान में निफ्ट कांगड़ा के सदस्यों एवं नराकास के सदस्यों हेतु “कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग” हेतु अप्रैल-जून तिमाही हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती रितु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निफ्ट कांगड़ा ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता श्री जे के मण्डल, सहायक निदेशक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली का परिचय दिया। कार्यशाला में कुल 47 सदस्यों ने भाग लिया। श्रीमती रितु रानी ने स्वागत भाषण में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने की अनिवार्यता के बारे में बताया तथा कार्यशाला में उपस्थित

सभी सदस्यों से कार्यशाला में प्रशिक्षण के बाद अपने कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।

वर्ष 2025-26 हेतु हिन्दी प्रोत्साहन योजना

राजभाषा नियमों के आधार पर निफ्ट कांगड़ा परिसर में समस्त कर्मचारीगण हेतु हिन्दी में सर्वाधिक कार्यालय कार्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। 01 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026 वार्षिक सत्र में कुल 5 कर्मचारियों ने प्रतियोगिता में प्रतिभागिता दर्शाई। प्रतियोगिता की शब्द सीमा कम से कम 20000 शब्दों की निर्धारित की गई थी। इस सत्र में श्री अनिल कुमार शर्मा (107100 शब्द) ने प्रथम स्थान - 1, श्रीमती रिनु (91,432 शब्द) ने प्रथम स्थान-2, श्री जोगिन्द्र कुमार (71,099 शब्द) ने द्वितीय-1, सुश्री तनु (50,063 शब्द) ने द्वितीय -2, सुश्री वैशाली (27000 शब्द) ने द्वितीय -3 स्थान प्राप्त किया।

नराकास की बैठकों में प्रतिभागिता:

निफ्ट कांगड़ा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धर्मशाला का एक सक्रिय सदस्य है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक छः में छमाही बैठक का आयोजन किया जाता है जिसमें निफ्ट कांगड़ा समयानुसार अपनी उपस्थिति दर्ज करता है।

* राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा ने नियमित रूप से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धर्मशाला का नियमित सदस्य है।

* नियमित रूप से समय - समय पर निफ्ट कांगड़ा ने कार्यालय प्रमुख के नेतृत्व में प्रत्येक छमाही बैठक में भाग लिया।

* इसके अलावा, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नराकास द्वारा आयोजित सभी प्रतियोगिताओं जैसे काव्य पाठ प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता इत्यादि में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

* इसके साथ ही नराकास अध्यक्ष के द्वारा एक उपसमिति का गठन किया गया है जिसमें नराकास से संबंधित समस्याओं के निवारण हेतु समय - समय पर बैठक की जाती है। निफ्ट कांगड़ा की ओर से कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्रीमती ऋतु रानी भाग लिया और जो भी कार्य उपसमिति के द्वारा प्रदान किया जाता है उसको बड़ी तत्परता से पूर्ण किया जाता है।

* निफ्ट कांगड़ा को नराकास समिति द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी सक्रिय प्रतिभागिता दर्शाता है एवं नराकास के तत्वावधान में निफ्ट कांगड़ा द्वारा नराकास के सभी सदस्यों हेतु परिसर में दिनांक 17.06.2026 को 11:00 बजे राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा के सभागार में नराकास धर्मशाला के तत्वावधान में निफ्ट कांगड़ा के सदस्यों एवं नराकास के सदस्यों हेतु "कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग" हेतु अप्रैल-जून तिमाही हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती रिनु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, निफ्ट कांगड़ा ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और अतिथि वक्ता श्री जे के मण्डल, सहायक

निदेशक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली का परिचय दिया। कार्यशाला में कुल 47 सदस्यों ने भाग लिया। श्रीमती रिनु रानी ने स्वागत भाषण में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने की अनिवार्यता के बारे में बताया तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों से कार्यशाला में प्रशिक्षण के बाद अपने कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनुरोध किया।

राजभाषा संबंधी नियम, उपनियम :

राजभाषा के विस्तृत प्रचार-प्रसार हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विभिन्न नियम उपनियमों को जारी किया गया है जिसका उपयोग केंद्र सरकार के सभी छोटे - बड़े कार्यालयों में किया जाता है जिसमें से एक नियम का विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 14 दस्तावेज आते हैं, जिन्हें अनिवार्यतः हिन्दी व अंग्रेजी में एक साथ तैयार, निष्पादित एवं जारी किया जाना चाहिए

- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज व सामान्य आदेश (General Orders) : सामान्य आदेशों से अभिप्राय है ऐसे आदेश, अनुदेश, निर्णय, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, परिपत्र जो कर्मचारियों के समूह के लिए हों।
- संकल्प (Resolution)
- नियम (Rule)
- प्रेस विज्ञप्ति (Press Communiques)
- सूचना (Notice)
- निविदा प्ररूप (Tender Forms)
- संविदा (Contract)
- करार (Agreement)
- अनुज्ञप्ति (Licence)
- अनुज्ञा पत्र (Permit)
- अधिसूचना (Notification)
- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)
- संसद के प्रस्तुति हेतु प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन (Administrative And other reports to be laid in parliament)
- संसद में प्रस्तुति हेतु राजकीय कागजात (Official papers to be laid in parliament)

धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले 14 दस्तावेजों की विस्तृत सूची

कानूनी परिभाषा के आधार पर राजभाषा विभाग ने इन दस्तावेजों की 14 श्रेणियों (14 Documents) में वर्गीकृत किया है, जो इस प्रकार हैं:

1. संकल्प (Resolutions)

सरकार की किसी बड़ी नीतिगत घोषणा या किसी आयोग/समिति के गठन के लिए जारी किए जाने वाले शासकीय निर्णय 'संकल्प' कहलाते हैं। इन्हें राजपत्र

(Gazette) में प्रकाशित किया जाता है।

2. सामान्य आदेश (General Orders)

यह प्रशासनिक दृष्टिकोण से सबसे व्यापक श्रेणी है। इसके अंतर्गत सभी स्थायी आदेश, नीति संबंधी निर्देश, परिपत्र (Circulars), कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandums), स्थायी अनुदेश और कोई भी ऐसा आदेश जो व्यापक स्तर पर कर्मचारियों या जनता को प्रभावित करता हो, शामिल हैं।

3. नियम (Rules)

सरकार द्वारा प्रशासनिक कार्यों, भर्ती प्रक्रियाओं या वित्तीय लेन-देन को विनियमित करने के लिए बनाए गए वैधानिक नियम (Statutory Rules) इस श्रेणी में आते हैं।

4. अधिसूचनाएं (Notifications)

राजपत्र (Gazette of India) में प्रकाशित होने वाले सभी वैधानिक आदेश, नियुक्तियां, पदोन्नतियां, स्थानांतरण या सेवानिवृत्ति से संबंधित सरकारी सूचनाएं इस श्रेणी के तहत द्विभाषी होनी चाहिए।

5. प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (Administrative or Other Reports)

कार्यालयों द्वारा तैयार की जाने वाली वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट (Annual Reports), ऑडिट रिपोर्ट या किसी विशेष विषय पर तैयार की गई आधिकारिक रिपोर्ट।

6. प्रेस विज्ञप्तियां (Press Communiques)

सरकार या उसके विभागों द्वारा जनसंचार माध्यमों (समाचार पत्रों, टीवी आदि) को जारी किए जाने वाले आधिकारिक बयान या प्रेस नोट।

7. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन

वार्षिक रिपोर्ट, विशेष जांच समितियों की रिपोर्ट या कोई भी प्रशासनिक दस्तावेज जो लोकसभा या राज्यसभा के पटल पर

प्रस्तुत किया जाना हो।

8. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र (Official Papers)
संसद सदस्यों की जानकारी के लिए रखे जाने वाले आंकड़े, सरकारी नीतियां, श्वेत पत्र (White Papers) और अन्य विधायी दस्तावेज।

9. संविदाएं (Contracts)

सरकार या उसके विभागों द्वारा किसी बाहरी एजेंसी, वेंडर या ठेकेदार के साथ निष्पादित किए जाने वाले आधिकारिक अनुबंध।

10. करार (Agreements)

दो विभागों, सरकारों या किसी संस्था के बीच होने वाले समझौते या संधि पत्र।

11. अनुज्ञप्तियां (Licences)

विभिन्न व्यापारिक या प्रशासनिक गतिविधियों के लिए दी जाने वाली आधिकारिक लाइसेंस।

12. अनुज्ञापत्र (Permits)

विशेष कार्यों, यात्रा या माल परिवहन के लिए विभाग द्वारा जारी किए जाने वाले परमिट या प्रवेश पत्र।

13. निविदा सूचनाएं (Tender Notices)

कार्यालयीन खरीद, निर्माण कार्य या सेवाओं की आउटसोर्सिंग के लिए समाचार पत्रों या सरकारी पोर्टलों (जैसे- CPPP) पर जारी की जाने वाली निविदा आमंत्रण सूचनाएं।

14. निविदा प्रारूप (Tender Forms)

निविदा में भाग लेने के लिए वेंडरों द्वारा भरे जाने वाले प्रपत्र (Tender Documents/Forms), जिनमें नियम और शर्तें लिखी होती हैं।





मुख्य परिसर गतिविधियाँ

1. निफ्ट कांगड़ा एक नज़र



हिमालय की धौलाधार पर्वतमालाओं की सुरम्य छांव में सजीव, कांगड़ा घाटी की गोद में स्थित निफ्ट कांगड़ा केंद्र ने वर्ष 2009 में, निफ्ट दिल्ली की दूरदर्शी नेतृत्व की प्रकाश किरणों में अपनी प्रेरणादायक यात्रा का आरंभ किया। इस केन्द्र का उद्घाटन 5 अगस्त 2009 को भारत सरकार के माननीय वस्त्र मंत्री श्री दयानिधि मारन एवं हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। स्थापना के पश्चात से ही यह केन्द्र वस्त्र, परिधान, जीवनशैली परिशिष्ट एवं फैशन संप्रेषण जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस संस्थान से अब तक 1400 से अधिक विद्यार्थी उत्कृष्टता की छाप छोड़ते हुए उत्तीर्ण हो, विभिन्न प्रतिष्ठित क्षेत्रों में अपनी सफलता की मिसाल कायम कर रहे हैं। निफ्ट-कांगड़ा ने समग्र शिक्षा और उत्कृष्टता के लिए एक मजबूत नींव स्थापित

की है। समय के साथ आधुनिक अधोसंरचना के निरंतर विकास के साथ, यह परिसर वैश्विक मानकों से सुसज्जित एक विशिष्ट शैक्षणिक केंद्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर चुका है।

2. हैडलूम पखवाड़ा-2025: भारतीय हथकरघा विरासत का रचनात्मक उत्सव

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), कांगड़ा में 4 से 22 अगस्त 2025 तक हैडलूम पखवाड़ा-2025 का आयोजन भारतीय हथकरघा विरासत, सतत फैशन और पारंपरिक शिल्प के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से किया गया। 18 दिवसीय इस आयोजन में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता रही। विविध शैक्षणिक, रचनात्मक एवं सहभागितापूर्ण गतिविधियों के माध्यम से भारतीय हथकरघा की समृद्ध परंपरा को समकालीन डिज़ाइन दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास किया गया।

पखवाड़े का शुभारंभ निदेशक प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा के प्रेरक संबोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने हथकरघा को भारतीय सांस्कृतिक विरासत, आत्मनिर्भरता और सतत फैशन का सशक्त माध्यम बताते हुए विद्यार्थियों को परंपरा एवं नवाचार के समन्वय के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस (7 अगस्त) के अवसर पर आयोजित हैडलूम फोटोबूथ एवं फैशन वॉक विशेष आकर्षण रहे, जिनमें विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने पारंपरिक हथकरघा परिधानों के माध्यम से भारतीय वस्त्र परंपरा की गरिमा और आधुनिक प्रासंगिकता का प्रभावी प्रदर्शन किया। पखवाड़े के दौरान विद्यार्थियों ने अपने क्राफ्ट रिसर्च एवं डॉक्यूमेंटेशन प्रोजेक्ट्स को सोशल मीडिया रील्स के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिससे भारतीय हथकरघा की विविधता और शिल्प परंपराओं को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का अवसर मिला। 8 अगस्त को आयोजित हैडलूम एवं स्पिनिंग कार्यशाला में प्रतिभागियों ने पारंपरिक बुनाई एवं कताई तकनीकों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया।

11 से 13 अगस्त के मध्य विद्यार्थियों ने अपने शोध एवं प्रलेखन कार्य विशेषज्ञ जूरी के समक्ष प्रस्तुत किए। इस अवसर पर

डीसीएचएल, कुल्लू के सहायक निदेशक श्री विनय कुमार ने विद्यार्थियों के शोध, विश्लेषण और सृजनात्मक दृष्टिकोण की सराहना की।

विद्यार्थियों में जागरूकता एवं सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से हैडलूम सेल्फी प्रतियोगिता, हैडलूम क्विज़, साड़ी एवं धोती ट्रेपिंग कार्यशाला तथा क्राफ्टप्रेन्योर प्रस्तुतिकरण जैसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन आयोजनों ने विद्यार्थियों को भारतीय शिल्प परंपराओं, परिधान संस्कृति तथा उद्यमिता की संभावनाओं से परिचित कराया।

22 अगस्त को आयोजित समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत विशेष हैडलूम फैशन वॉक ने पारंपरिक हथकरघा वस्त्रों की सौंदर्यात्मकता और समकालीन डिज़ाइन संभावनाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया।

समापन अवसर पर निदेशक प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा ने कहा कि हैडलूम पखवाड़ा विद्यार्थियों को भारतीय शिल्प परंपराओं के संरक्षण के साथ-साथ उनके आधुनिक अनुप्रयोगों और नवाचार की संभावनाओं को समझने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए सुश्री लवदीप सिंह, सहायक प्राध्यापक एवं क्राफ्ट क्लस्टर समन्वयक, तथा आयोजन से जुड़े सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को बधाई दी।

इस अवसर पर कैपस अकादमिक समन्वयक श्री विनोद शर्मा, लिंक सीएसी डॉ. पवितर पुनीत सिंह, अन्य संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। भारतीय हथकरघा विरासत को समर्पित यह पखवाड़ा विद्यार्थियों में शिल्प, संस्कृति, सतत विकास और नवाचार के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।





3. 79वां स्वतंत्रता दिवस एवं 'हर घर तिरंगा' अभियान-2025

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी), कांगड़ा में 15 अगस्त 2025 को 79वां स्वतंत्रता दिवस एवं 'हर घर तिरंगा' अभियान-2025 का आयोजन स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल (SDAC) के समन्वय में देशभक्ति, उत्साह और राष्ट्रीय गौरव के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता करते हुए राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और सम्मान व्यक्त किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ। इसके पश्चात आयोजित तिरंगा यात्रा ने पूरे परिसर में देशभक्ति का वातावरण निर्मित किया। विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने हाथों में तिरंगा लेकर राष्ट्र की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अपनी निष्ठा का संदेश दिया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अंतर्गत विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तथा रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया गया। 'हर घर तिरंगा' अभियान के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को अपने घरों एवं समुदायों में राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान एवं नागरिक उत्तरदायित्व के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर तिरंगे की थीम पर आधारित पोस्टर मेकिंग एवं रंगोली प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। सायंकाल पूरे परिसर को तिरंगे की आकर्षक रोशनी से सजाया गया, जिसने उत्सव के वातावरण को और अधिक गरिमामय एवं प्रेरणादायी बना दिया।

4. एनआईएफटी कांगड़ा में जन्माष्टमी उत्सव

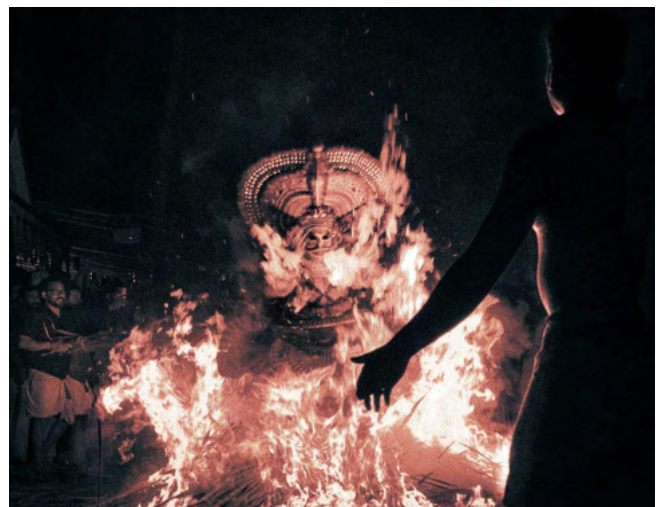
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 16 अगस्त 2025 को स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल (SDAC)

के समन्वयक श्री राजेश धीमान एवं डॉ. रोमिका यादव के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित महोत्सव में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना एवं भजन-कीर्तन से हुआ। विद्यार्थियों ने कृष्ण-लीला पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देकर श्रीकृष्ण के जीवन, आदर्शों एवं भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

उत्सव का मुख्य आकर्षण मटकी फोड़ प्रतियोगिता रही, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह एवं टीम भावना के साथ भाग लिया। इस आयोजन ने परिसर में आनंद, उल्लास एवं सामूहिक सहभागिता का वातावरण बनाया। जन्माष्टमी उत्सव का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं आध्यात्मिक परंपराओं से जोड़ते हुए नैतिक मूल्यों, सहयोग, भाईचारे एवं सांस्कृतिक एकता की भावना को प्रोत्साहित करना था।

5. विश्व फोटोग्राफी दिवस पर फोटोग्राफी प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 19 अगस्त 2025 को विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के लिए फोटोग्राफी प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना तथा फोटोग्राफी के माध्यम से उनकी कलात्मक दृष्टि को मंच प्रदान करना था। इस कार्यक्रम का आयोजन एनआईएफटी कांगड़ा एडवेंचर एवं फोटोग्राफी क्लब द्वारा सुश्री दीपशिखा वालिया एवं श्री अरेदथ सिद्धार्थ के समन्वयन में किया गया। आयोजित प्रदर्शनी में विद्यार्थियों की 40 से अधिक उत्कृष्ट तस्वीरें प्रदर्शित की गईं, जिनमें प्राकृतिक दृश्य, पोर्ट्रेट, स्ट्रीट फोटोग्राफी एवं दैनिक जीवन के विविध आयामों को आकर्षक रूप से प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी ने परिसर को एक जीवंत कला दीर्घा का



स्वरूप प्रदान किया, जहाँ विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस अवसर पर आगंतुकों ने विद्यार्थियों द्वारा निर्मित सीआरडी (CRD) डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का भी अवलोकन किया तथा इंटरैक्टिव फोटोग्राफी इंस्टॉलेशन का अनुभव प्राप्त किया। प्रतियोगिता में प्राप्त प्रविष्टियों में से तीन सर्वश्रेष्ठ तस्वीरों का चयन किया गया, जिन्हें प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। यह आयोजन विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा और दृश्य कथन (Visual Storytelling) की क्षमता को प्रोत्साहित करने का प्रभावी मंच सिद्ध हुआ।

6. गणेश चतुर्थी महोत्सव

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 25 से 31 अगस्त 2025 तक गणेश चतुर्थी महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ आयोजित किया गया। स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल द्वारा आयोजित इस सप्ताहव्यापी महोत्सव के दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

महोत्सव का शुभारंभ भगवान श्री गणेश की प्रतिमा स्थापना के साथ हुआ। सप्ताहभर प्रतिदिन पूजा-अर्चना, आरती एवं भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया, जिससे पूरे परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा। विद्यार्थियों ने श्रद्धा एवं उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में भाग लिया।

उत्सव के दौरान विद्यार्थियों द्वारा गीत, नृत्य एवं अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं की समृद्ध झलक प्रस्तुत की। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति, सहयोग एवं सामुदायिक सहभागिता की भावना को भी प्रोत्साहित किया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक परंपराओं से जोड़ना तथा उनमें नैतिक मूल्यों, सामाजिक सद्भाव एवं सांस्कृतिक एकता की भावना को सुदृढ़ करना था।

7. राष्ट्रीय खेल दिवस पर तीन दिवसीय खेल समारोह

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 29 अगस्त 2025 को राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय खेल समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन श्री कमलजीत सिंह एवं श्री विनीत कुमार द्वारा किया गया। प्रतिस्पर्धा के मूल्यों का पालन करने का संकल्प लिया। आयोजन के दौरान वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, क्रिकेट एवं रस्साकशी सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें प्रतिभागियों ने उत्साह, टीम भावना एवं खेल कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

समापन समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों एवं विजेता टीमों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर खेलों



के महत्व, शारीरिक स्वास्थ्य, अनुशासन एवं टीमवर्क की भावना पर विशेष बल दिया गया।

इस खेल समारोह का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों में फिटनेस, खेल भावना, नेतृत्व क्षमता तथा आपसी सहयोग को प्रोत्साहित करना और स्वस्थ एवं सक्रिय जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। आयोजन ने पूरे परिसर में ऊर्जा, उत्साह एवं सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण स्थापित किया।

8. शिक्षक दिवस समारोह

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 5 सितंबर 2025 को स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल (SDAC) द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन उत्साह एवं सम्मान के साथ किया गया। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं तथा शिक्षकों के सम्मान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। इस अवसर पर शिक्षा के महत्व, गुरु-शिष्य परंपरा एवं शिक्षकों के योगदान पर विचार साझा किए गए। विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें सम्मानित किया।

इस आयोजन का उद्देश्य शिक्षकों के योगदान का सम्मान करना, विद्यार्थियों में गुरु के प्रति आदर की भावना को सुदृढ़ करना तथा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करना था।

9. ओणम उत्सव में झलकी केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 19 सितंबर 2025 को स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल (SDAC) द्वारा केरल के प्रमुख पर्व ओणम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन संकाय सदस्य सुश्री कार्तिका विजयन एवं श्री सिद्धार्थ अरेदथ के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ तथा विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ पुक्कलम (फूलों की रंगोली) निर्माण से हुआ। इसके पश्चात पुक्कलम एवं रस्साकशी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विजेताओं को केरल की परंपरा के प्रतीक स्वरूप केले भेंट कर सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत कलारीपयट्टु का प्रदर्शन, पारंपरिक ओणम गीत तथा विद्यार्थियों द्वारा समूह नृत्य प्रस्तुत किए गए, जिन्होंने केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की सुंदर झलक प्रस्तुत की। कार्यक्रम का समापन डीजे नाइट के साथ हुआ।

इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित कराना तथा परिसर में सांस्कृतिक समरसता, सहभागिता और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित करना था।

10. नवरात्रि उत्सव में दिखे संस्कृति और उत्सव के रंग

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 22 सितंबर से 1 अक्टूबर 2025 तक स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटीज़ सेल (SDAC) के समन्वय में नवरात्रि, रामलीला, गरबा नाइट एवं फूड फेस्ट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

आयोजन के दौरान रामलीला, गरबा नाइट एवं फूड फेस्ट प्रमुख आकर्षण रहे। विद्यार्थियों ने पारंपरिक परिधानों में गरबा एवं डांडिया प्रस्तुत किया। रामलीला के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन एवं आदर्शों का संदेश दिया गया। फूड फेस्ट में विभिन्न राज्यों के पारंपरिक व्यंजनों का प्रदर्शन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित कराना तथा परिसर में सांस्कृतिक समरसता, सहभागिता और आपसी सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना था।

11. स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत विविध जागरूकता एवं स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा-2025 के अंतर्गत विविध स्वच्छता एवं

जन-जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। अभियान का समन्वय नोडल अधिकारी एवं सहायक प्राध्यापक शिवा ए. राजा द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय सहभागिता की।

पखवाड़े की शुरुआत स्वच्छता शपथ एवं सोशल मीडिया जागरूकता अभियान से हुई। इसके पश्चात परिसर में स्वच्छता अभियान एवं श्रमदान का आयोजन किया गया। स्वच्छ भारत सांस्कृतिक उत्सव तथा सस्टेनेबल फैशन कार्यशाला के माध्यम से स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं जिम्मेदार फैशन का संदेश दिया गया।

अभियान के प्रमुख आकर्षण सफाई मित्र सुरक्षा शिविर में 100 से अधिक सफाई मित्रों एवं कर्मचारियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इस दौरान रक्तचाप एवं रक्त शर्करा की जांच, टिटनेस टीकाकरण तथा आवश्यक दवाइयों की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

पखवाड़े का समापन क्लीन ग्रीन उत्सव के साथ हुआ, जिसमें विद्यार्थियों ने अपशिष्ट सामग्री से तैयार परिधानों, सजावट एवं प्रॉप्स के माध्यम से रामलीला प्रस्तुत कर जीरो वेस्ट और पुनर्चक्रण का संदेश दिया। यह आयोजन स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रभावी उदाहरण रहा।



12. राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, कांगड़ा में 11वें दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों ने प्राप्त की डिग्रियाँ

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा का 11वां दीक्षांत समारोह 31 अक्टूबर 2025 को टांडा सभागार में गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। वर्ष 2025 बैच के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए यह समारोह उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों का महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात मूर्तिकार एवं शिक्षाविद् पद्मश्री बिमन बिहारी दास रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में एनआईएफटी दिल्ली की पूर्व छात्रा एवं ऑटम सोर्सिंग की



संस्थापक सुश्री दीपशिखा चावला उपस्थित रहीं। शैक्षणिक प्रोसेशन का नेतृत्व मुख्य अतिथि ने किया। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) शिंजु महाजन, प्रमुख-शैक्षणिक कार्य एवं लिंक डीन; प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा, निदेशक, एनआईएफटी कांगड़ा; श्री दीपक राणा, संयुक्त निदेशक; श्री विनोद कुमार शर्मा, केंद्र शैक्षणिक समन्वयक तथा सभी पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। अतिथियों का पारंपरिक हिमाचली शॉल एवं टोपी पहनाकर स्वागत किया गया। स्वागत भाषण एवं शैक्षणिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए निदेशक प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा ने बताया कि वर्ष 2025 बैच के कुल 186 विद्यार्थियों ने अपनी शैक्षणिक यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है। उन्होंने विद्यार्थियों को जुनून, अनुशासन एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया तथा डिज़ाइन, प्रौद्योगिकी, नवाचार, सतत फैशन और क्षेत्रीय हस्तशिल्प के क्षेत्र में संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

समारोह में स्नातकों को दीक्षांत प्रतिज्ञा प्रो. (डॉ.) शिंजु महाजन द्वारा दिलाई गई। विशिष्ट अतिथि सुश्री दीपशिखा चावला ने अपने अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को समर्पण एवं ईमानदारी के साथ कार्य करने का संदेश दिया। मुख्य अतिथि पश्री बिमन बिहारी दास ने भारतीय कला एवं शिल्प परंपराओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हुए वैश्विक स्तर पर उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित किया।

समारोह के दौरान 43 विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन, सामुदायिक सेवा एवं सर्वांगीण उपलब्धियों के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके उपरांत 130 स्नातक एवं 56

स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को डिग्रियाँ प्रदान की गईं। कार्यक्रम के अंत में केंद्र शैक्षणिक समन्वयक श्री विनोद कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय गान एवं सामूहिक छायाचित्र के साथ समारोह का समापन हुआ।

13. पूर्व छात्र सम्मेलन (एलुमनी मीट) 2025 में साझा हुए अनुभव

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 1 नवंबर 2025 को एलुमनी मीट-2025 का आयोजन किया गया। विभिन्न बैचों के पूर्व छात्र अपने संस्थान लौटे और वर्तमान विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के साथ संवाद कर साझा किए। कार्यक्रम की शुरुआत विभागों एवं परिसर भ्रमण से हुई। पूर्व छात्रों ने संस्थान में हुए शैक्षणिक एवं बुनियादी विकास को देखा तथा विद्यार्थियों के साथ उद्योग जगत के अनुभव साझा किए। संध्याकालीन सत्र का शुभारंभ केंद्र शैक्षणिक समन्वयक श्री विनोद कुमार शर्मा के स्वागत संबोधन से हुआ। निदेशक प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा ने पूर्व छात्रों का स्वागत करते हुए उन्हें संस्थान की सबसे बड़ी शक्ति और वर्तमान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत बताया।

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अनेक प्रतिष्ठित पूर्व छात्र उपस्थित रहे, जिनमें श्री सुमित कुमार यादव (सह-संस्थापक, डिज़ाइन एकत्रित), सुश्री यामिनी बेरी (हेड, स्ट्रैटेजी एंड ग्रोथ, पॉलसन्स), श्री सुर्याश पांडे (गूगल), श्री शिवम भंडारी (गैस इंडिया), श्री शशांक केन्या (डिज़ाइन कंसल्टेंट) तथा श्री अमित कुमार (कैसियो) शामिल थे। कार्यक्रम में 50 से अधिक पूर्व छात्रों ने सहभागिता की।

सांस्कृतिक सत्र में बॉलीवुड गायक निशांत ठाकुर की



संगीतमय प्रस्तुतियाँ आकर्षण का केंद्र रहीं। इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) शिंजु महाजन, श्री दीपक राणा, श्री विनोद कुमार शर्मा, सभी पाठ्यक्रम समन्वयक एवं संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में आरआईसी सुश्री मारिया अफज़ल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। एलुमनी मीट-2025 ने पूर्व छात्रों और संस्थान के बीच जुड़ाव, सहयोग तथा आत्मीय संबंधों को और अधिक सुदृढ़ किया।

14. वार्षिक उत्सव 'स्पेक्ट्रम-2026' में दिखा रचनात्मकता और संस्कृति का संगम

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 25 से 27 फरवरी 2026 तक वार्षिक फ्लैगशिप उत्सव 'स्पेक्ट्रम-2026' का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। "रंगरेज - रंगों और संस्कृति के अद्भुत संगम" थीम पर आधारित इस तीन दिवसीय उत्सव में विद्यार्थियों ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं एवं समृद्ध वस्त्र विरासत को रचनात्मकता और नवाचार के साथ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सफल आयोजन स्टूडेंट डेवलपमेंट एक्टिविटी कोऑर्डिनेटर डॉ. रोमिका यादव एवं श्री राजेश धीमान के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती श्रद्धा चंद्रा, श्री दीपक राणा, संयुक्त निदेशक तथा श्री विनोद कुमार शर्मा, केंद्र शैक्षणिक समन्वयक द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। राज्य के विभिन्न जिलों से 12 से अधिक संस्थानों के 200 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्सव में सहभागिता की।

तीन दिवसीय आयोजन के दौरान छात्र-नेतृत्व वाले क्लबों द्वारा कैनवास पेंटिंग, ऐड-मैड, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, प्रश्नोत्तरी, फुटसल, क्रिकेट, बैडमिंटन, वॉलीबॉल, शतरंज, शिपरेक, अमेज़िंग रेस तथा नृत्य सहित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

उत्सव का मुख्य आकर्षण फैशन शो रहा, जिसमें 'रंगरेज' थीम पर आधारित परिधानों ने भारतीय सांस्कृतिक विविधता और वस्त्र परंपरा की आकर्षक प्रस्तुति दी। फैशन शो की निर्णायक के रूप में "मिस हिमाचल" पलक शर्मा उपस्थित रहीं। सांस्कृतिक संध्या में पिनाक बैंड, सूफी गायक भावेश कक्कड़ तथा समापन समारोह में एमटीवी हसल-3 से 'रैप आईडी' के



नाम से प्रसिद्ध मयंक रावत ने अपनी दमदार रैप प्रस्तुतियों से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया।

समापन समारोह में टाइटल प्रायोजक यूनियन बैंक, कांगड़ा की ओर से शाखा प्रबंधक श्रीमती सोनाली शर्मा ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया। तीन दिवसीय उत्सव ने रचनात्मकता, सांस्कृतिक विविधता, प्रतिभा और उत्साह का जीवंत उत्सव प्रस्तुत किया।



15. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा-2026 के अंतर्गत विविध स्वच्छता एवं जागरूकता गतिविधियों का आयोजन

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार 1 से 15 मार्च 2026 तक स्वच्छता पखवाड़ा-2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समन्वय नोडल अधिकारी एवं सहायक प्राध्यापक श्री शिवा ए. राजा द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

पखवाड़े की शुरुआत स्वच्छता शपथ एवं जागरूकता अभियान से हुई। परिसर में पोस्टर एवं बैनरों के माध्यम से स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इसके उपरान्त शैक्षणिक भवनों, छात्रावासों, जनरेटर कक्ष, जल टंकियों, छतों तथा परिसर के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया गया। साथ ही वृक्षों की छंटाई, अपशिष्ट निष्पादन, कम्पोस्ट निर्माण तथा विद्युत एवं स्वच्छता व्यवस्थाओं के रखरखाव जैसे कार्य भी किए गए। विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए रील निर्माण प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, वेस्ट-टू-वेल्थ गतिविधियाँ तथा 'वेस्ट टू आर्ट' कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका संचालन सुश्री स्वाति शर्मा ने किया। इसके साथ ही एकल-उपयोग प्लास्टिक के उन्मूलन के लिए विशेष जागरूकता अभियान भी चलाया गया।

पखवाड़े के अंतर्गत फोर्टिस हॉस्पिटल, कांगड़ा की डॉ. विजया भारती के द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान, सफाई मित्रों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर, वृक्षारोपण अभियान तथा प्लांटिंग गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों ने स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं सतत जीवनशैली के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ किया तथा परिसर में स्वच्छ, हरित और जिम्मेदार वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 6 मार्च 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं के लिए स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समन्वय नोडल अधिकारी श्री शिवा ए. राजा एवं डॉ. रोमिका यादव द्वारा किया गया। इसमें महिला कर्मचारियों एवं सफाई मित्रों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मुख्य वक्ता के रूप में फोर्टिस हॉस्पिटल, कांगड़ा की वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. विजया भारती के. ने मासिक धर्म स्वच्छता, संतुलित पोषण, निवारक स्वास्थ्य देखभाल, नियमित स्वास्थ्य जांच तथा स्वस्थ जीवनशैली के महत्व पर जानकारी दी। प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से प्रतिभागियों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया। यह व्याख्यान महिलाओं में स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं समग्र कल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा।

16. शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला-2026 में पारंपरिक शिल्प और नवाचार का संगम

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 18 से 20 मार्च 2026 तक तीन दिवसीय "शिल्पकार जागरूकता कार्यशाला-2026" का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक शिल्पकारों को आधुनिक डिज़ाइन, ब्रांडिंग, विपणन एवं डिजिटल तकनीकों से जोड़ते हुए उनके कौशल, आजीविका एवं बाज़ार तक पहुंच को सशक्त बनाना था। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ, जिसमें राज्य के विभिन्न शिल्प समूहों से 52 शिल्पकारों ने सहभागिता की।

उद्घाटन अवसर पर संयुक्त निदेशक श्री दीपक राणा ने शिल्पकारों का स्वागत करते हुए पारंपरिक शिल्प को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। कैपस शैक्षणिक समन्वयक श्री विनोद कुमार शर्मा ने स्थानीय हस्तशिल्प को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने में डिज़ाइन नवाचार की भूमिका पर प्रकाश डाला। वहीं एडमिशन समन्वयक श्री कमलजीत सिंह ने शिल्पकारों एवं उनके बच्चों के लिए एनआईएफटी में उपलब्ध विशेष प्रवेश योजनाओं एवं वित्तीय सहायता संबंधी प्रावधानों की जानकारी दी।

कार्यशाला में पुल्ला चप्पल (मंडी), कुल्लू बुनकर, चंबा रुमाल, बांस शिल्प, पाइन नीडल क्राफ्ट, चंबा धातु शिल्प, किन्नौरी शॉल तथा लाहौल-स्पीति की हस्त बुनाई सहित हिमाचल प्रदेश के विभिन्न पारंपरिक शिल्प समूहों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विशेष आमंत्रित विशेषज्ञों में योशिता क्राफ्ट्स की सुश्री अरवि पांडिया ने डिज़ाइन हस्तक्षेप पर तथा गरशा लूमस, लाहौल के श्री तेनजिन बोध ने ब्रांडिंग एवं स्टोरीटेलिंग पर व्याख्यान दिए। उन्होंने पारंपरिक उत्पादों को आधुनिक बाज़ार की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने और उनकी प्रभावी प्रस्तुति के महत्व पर विशेष बल दिया। तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान एनआईएफटी के संकाय सदस्यों द्वारा डिज़ाइन हस्तक्षेप, एप्लीक तकनीक, सतत पैकेजिंग, उत्पाद प्रदर्शन, क्राफ्ट मार्केटिंग में जनरेटिव एआई के उपयोग तथा ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म जैसे समसामयिक विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रतिभागी शिल्पकारों को धर्मशाला स्थित नोरबुलिंगका इंस्टीट्यूट का शैक्षणिक भ्रमण भी कराया गया, जिससे उन्हें पारंपरिक कला संरक्षण एवं संस्थागत कार्यप्रणाली की जानकारी प्राप्त हुई।

कार्यशाला के अंतिम दिन आयोजित क्राफ्ट बाज़ार विशेष आकर्षण का केंद्र रहा, जहाँ विभिन्न शिल्प समूहों ने अपने हस्तशिल्प एवं हथकरघा उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय किया। चंबा चप्पल, चंबा रुमाल, कुल्लू एवं किन्नौरी शॉल, हिमाचली टोपी तथा पाइन उत्पादों सहित अनेक पारंपरिक शिल्पों को विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने सराहा और

स्थानीय शिल्पकारों का उत्साहवर्धन किया। समापन समारोह में संयुक्त निदेशक श्री दीपक राणा, कैपस शैक्षणिक समन्वयक श्री विनोद कुमार शर्मा, क्लस्टर इनिशिएटिव कोऑर्डिनेटर सुश्री लवदीप सिंह तथा विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों की उपस्थिति में प्रतिभागी शिल्पकारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। कार्यशाला ने पारंपरिक भारतीय हस्तशिल्प को आधुनिक डिज़ाइन, तकनीक एवं डिजिटल विपणन से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में शिल्पकारों को कौशल उन्नयन, नवाचार और बाज़ार विस्तार के नए अवसर उपलब्ध कराए।

17. ग्रेजुएशन शो-2026 में उभरी नवाचार और युवा रचनात्मक प्रतिभा

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) कांगड़ा में 22 मई 2026 को ग्रेजुएशन शो-2026 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2026 की स्नातक बैच के 208 विद्यार्थियों ने अपने शैक्षणिक एवं रचनात्मक सफर की उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हुए उद्योग-उन्मुख प्रोजेक्ट्स और डिज़ाइन नवाचारों का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि आदित्य बिड़ला लाइफस्टाइल ब्रांड्स लिमिटेड के वाइस प्रेसिडेंट (क्वालिटी एश्योरेंस) श्री राकेश कुमार तथा विशिष्ट अतिथि बेटेक्स के डायरेक्टर (मार्केटिंग, सोर्सिंग एवं मर्चेन्डाइजिंग) श्री मोहित बत्रा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर निदेशक प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा तथा कैपस अकादमिक कोऑर्डिनेटर श्री विनोद कुमार शर्मा भी उपस्थित रहे। प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा ने वर्ष 2026 की स्नातक बैच को बधाई देते हुए उनकी मेहनत, समर्पण और उपलब्धियों की सराहना की तथा उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

ग्रेजुएशन प्रोजेक्ट प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं शोध-आधारित परियोजनाएँ आकर्षण का केंद्र रहीं। अंडरग्रेजुएट कार्यक्रमों के अंतर्गत फैशन एंड लाइफस्टाइल एक्सेसरीज़ विभाग ने कार्यात्मक एवं सौंदर्यपरक नवाचार प्रस्तुत किए। फैशन कम्युनिकेशन विभाग की “कम्युनिक” प्रदर्शनी में एआई, वर्चुअल रियलिटी और विजुअल नैरेटिव्स पर आधारित परियोजनाएँ प्रदर्शित की गईं।

टेक्सटाइल डिज़ाइन विभाग ने “तंतु” के माध्यम से फैब्रिक इनोवेशन की विविध संभावनाओं को प्रस्तुत किया, जबकि अपैरल प्रोडक्शन/टेक्नोलॉजी विभाग की “टेक्नोवा” प्रदर्शनी तकनीकी दक्षता एवं उद्योग-उन्मुख समाधानों पर केंद्रित रही। पोस्टग्रेजुएट कार्यक्रमों के अंतर्गत फैशन मैनेजमेंट स्टडीज़ विभाग की “बॉटमलाइन” प्रदर्शनी ने फैशन व्यवसाय में रणनीतिक सोच एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण को रेखांकित किया। वहीं डिज़ाइन स्पेस के विद्यार्थियों ने शोध-आधारित स्पेशियल एवं एक्सपीरिएंशियल डिज़ाइन समाधान प्रस्तुत किए, जिनमें कार्यक्षमता, सौंदर्य और नवाचारी डिज़ाइन सोच का प्रभावी समन्वय देखने को मिला।

ग्रेजुएशन शो विद्यार्थियों के लिए अपने डिज़ाइन कलेक्शंस प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण मंच बना। विभिन्न थीम्स और अवधारणाओं पर आधारित इन कलेक्शंस में विद्यार्थियों की विशिष्ट रचनात्मक दृष्टि परिलक्षित हुई। प्रस्तुत परियोजनाओं में नवीनतम डिज़ाइन ट्रेंड्स, उभरती तकनीकों, स्थिरता तथा उद्योग की बदलती आवश्यकताओं को भी प्रभावी रूप से समाहित किया गया।

मुख्य अतिथि श्री राकेश कुमार ने संस्थान द्वारा प्रदान की जा रही समग्र शिक्षा की सराहना करते हुए कहा कि एनआईएफटी कांगड़ा विद्यार्थियों को अकादमिक उत्कृष्टता, उद्योग अनुभव, टीमवर्क और प्रोफेशनलिज्म से सशक्त बनाता है, जिससे वे फैशन एवं क्रिएटिव इंडस्ट्री में विभिन्न भूमिकाओं के लिए तैयार होते हैं। विशिष्ट अतिथि श्री मोहित बत्रा ने भी विद्यार्थियों को अपने पेशेवर जीवन में नवाचार, रचनात्मकता और उत्कृष्टता को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंत में कैपस अकादमिक कोऑर्डिनेटर श्री विनोद कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर डिज़ाइन एवं फैशन उद्योग से जुड़े अनेक प्रतिष्ठित अतिथि भी उपस्थित रहे, जिनमें श्री अरित्र भट्टाचार्य (सीईओ, हरिताहकार्ट प्राइवेट लिमिटेड), सुश्री भाग्यश्री गौतम (विजिटिंग फैकल्टी, एनआईएफटी कांगड़ा), श्री ब्रज माधव (यूएक्स एवं प्रोडक्ट डिज़ाइनर, जियो-नाउ फ्लोट्स, हैदराबाद), श्री उत्कर्ष तिवारी (क्रिएटिव डायरेक्टर), श्री अनुप राणा (प्रोडक्ट डेवलपमेंट एवं मर्चेन्डाइजिंग विशेषज्ञ), श्री संतोष आनंद (सहायक निदेशक, हस्तशिल्प), श्री दिलीप भट्ट (डिज़ाइन मैनेजर, जैक ग्रुप, गुरुग्राम), श्री सुधीर जॉन बोरो (संस्थापक, रेड डिज़ाइन, रांची), श्री अनूप कुमार राय (संस्थापक, MARM, दिल्ली), सुश्री ऋतु सोनी कपिल (सीनियर डिज़ाइनर, हीरा लाल एंड संस, नोएडा), डॉ. वी. सेंथिल कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर, एनआईएफटी दिल्ली) तथा सुश्री आशिमा नेगी (स्टेट कोऑर्डिनेटर एवं नॉलेज मैनेजमेंट एडवाइजर, GIZ इंडिया) शामिल थे।

ग्रेजुएशन शो-2026 ने उभरती डिज़ाइन प्रतिभाओं, नवाचारी विचारों, समकालीन शिक्षण दृष्टिकोण तथा उद्योग-उन्मुख परियोजनाओं को एक प्रभावी मंच प्रदान करते हुए स्नातक बैच-2026 की उपलब्धियों को यादगार बनाया।





18. फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग द्वारा चार दिवसीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग, द्वारा 9 से 12 जून 2026 तक व्यावसायिक विश्लेषण (Business Analytics) विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण-प्रशिक्षकों (Training of Trainers - ToT) कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस क्षमता-वर्धन कार्यक्रम में निफ्ट के विभिन्न परिसरों से फैशन प्रबंधन अध्ययन विभाग के संकाय सदस्यों ने सहभागिता करते हुए ज्ञान, अनुभव एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रथाओं का आदान-प्रदान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन एवं डॉ. अनन्या देव रॉय की बाँसुरी वादन प्रस्तुति के साथ हुआ। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अनन्या देव रॉय, एसोसिएट प्रोफेसर, निफ्ट कोलकाता तथा सुश्री आकांक्षा डायमा, असिस्टेंट प्रोफेसर, निफ्ट कांगड़ा द्वारा किया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बिज़नेस एनालिटिक्स की मूलभूत अवधारणाओं, डेटा विश्लेषण, एक्सेल एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित डेटा विज़ुअलाइज़ेशन, क्लस्टर विश्लेषण, कॉन्जॉइंट विश्लेषण, फैक्टर विश्लेषण तथा पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण (Predictive Analytics) जैसे समकालीन विषयों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विशेषज्ञ सत्रों का संचालन प्रो. (डॉ.) रजत अग्रवाल, प्रो. (डॉ.) राहुल चंद्रा, डॉ. अनन्या देव रॉय, सुश्री आकांक्षा डायमा, श्री संगीत कुमार तथा श्री आशुतोष शर्मा द्वारा किया गया। समापन दिवस पर प्रतिभागियों को थीमैटिक एवं कंटेंट विश्लेषण की गुणात्मक अनुसंधान विधियों तथा कंप्यूटर-सहायित गुणात्मक डेटा विश्लेषण सॉफ्टवेयर (CAQDAS) के प्रभावी उपयोग से परिचित कराया गया। विशेषज्ञ व्याख्यानों, अध्ययन-प्रकरणों, व्यावहारिक अभ्यासों एवं सहभागितापूर्ण गतिविधियों से समृद्ध इस कार्यक्रम ने संकाय सदस्यों की विश्लेषणात्मक, अनुसंधान एवं अध्यापन संबंधी दक्षताओं को सुदृढ़ किया। साथ ही, समकालीन अनुसंधान उपकरणों एवं विश्लेषणात्मक प्रविधियों के प्रभावी उपयोग के माध्यम से शिक्षण, अनुसंधान, परामर्श तथा शैक्षणिक नवाचार को नई दिशा प्रदान की।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



वेदांतिक जीवन- उद्देश्य-प्राप्ति का मार्ग “वेदों की ओर लौटें - स्वामी विवेकानंद”

डॉ. राहुल चंद्रा, निदेशक

मैं आपका परिचय भारत के एक बहुत ही प्राचीन दर्शन से कराता हूँ, जिसे वेदांत दर्शन अर्थात वेदों का दर्शन कहा जाता है। यह प्राचीन आर्य साहित्य पर आधारित दर्शन है, जिसे वेदों के नाम से जाना जाता है। वेदांत दर्शन पूरी तरह से व्यक्ति-निरपेक्ष है और इसकी उत्पत्ति किसी व्यक्ति या पैगंबर से नहीं हुई है।

यह दर्शन कहता है कि मनुष्य दिव्य है और हमारे आस-पास जो कुछ भी दिखाई देता है, वह उसी दिव्य चेतना का परिणाम है। हममें से प्रत्येक के भीतर अस्तित्व, ज्ञान और आनंद का वह अनंत स्रोत विद्यमान है। ; और हमारे बीच का अंतर उस दिव्यता को प्रकट करने की कम या ज्यादा क्षमता के कारण होता है। इसने सबको सिखाया कि प्रत्येक आत्मा आपकी अपनी आत्मा है और प्रत्येक व्यक्ति आपका अपना शरीर है; किसी को चोट पहुँचाने का अर्थ है स्वयं को चोट पहुँचाना, और किसी से प्रेम करने का अर्थ है स्वयं से प्रेम करना। मैं अनंत हूँ, बस अभी मुझे इसका एहसास नहीं है। मैं बस इसी अनंतता का ज्ञान पाने के लिए संघर्ष कर रहा हूँ और पूर्णता तब प्राप्त होगी जब इस अनंतता का पूरा ज्ञान हो जाएगा।

माया: माया का सिद्धांत उन प्रमुख आधारों में से एक है जिन पर वेदांत टिका है। हमारा सम्पूर्ण जीवन एक विरोधाभास है, यह अस्तित्व और अनस्तित्व का मिश्रण है। जो समस्याएँ मनुष्य के सबसे करीब और अहम होती हैं, वे उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं और दिन-रात समाधान की माँग करती हैं; लेकिन वह उन्हें हल नहीं कर पाता, क्योंकि वह अपनी बुद्धि के दायरे से बाहर नहीं जा सकता। प्रत्येक बच्चा जन्म से आशावादी होता है। यौवन में वह और भी ज्यादा आशावादी हो जाता है। एक युवा के लिए मृत्यु जैसी चीज़ पर यकीन करना मुश्किल होता है। फिर बुढ़ापा आता है और जीवन खंडहरों का ढेर बन जाता है। इस तरह, हम बिना यह जाने कि हम कहाँ जा रहे हैं, प्रकृति के थपेड़े खाते हुए एक छोर से दूसरे छोर तक जाते रहते हैं।

पूरी दुनिया मृत्यु की ओर बढ़ रही है। हमारी सारी उन्नति, सुख-सुविधाएँ, दौलत और ज्ञान—सबका अंत मृत्यु ही है। फिर

भी, जीवन से इतनी ज़बरदस्त आसक्ति बनी रहती है, और यही माया है। एक माँ अपने बच्चे की देखभाल कर रही है। उसकी पूरी आत्मा, उसका सम्पूर्ण जीवन उसी बच्चे में बसा है। भले ही बच्चा उसे दुत्कारे, फिर भी वह उससे आसक्त रहती है; यही माया है। हम जिस थोड़ी-बहुत भौतिक समृद्धि का आनंद लेते हैं, वही कहीं और उतनी ही पीड़ा का कारण बनती है। और यही माया है।

यह माना जाता है कि दुनिया अच्छाई - बुराई, सुख-दुःख का मिश्रण है और एक को बढ़ाने के लिए दूसरे को भी बढ़ाना ज़रूरी है। इसलिए, बुराई को रोकने का एकमात्र तरीका अच्छाई को भी रोकना है, क्योंकि ये दोनों एक ही चीज़ के अलग-अलग दो पहलू हैं। इच्छा को पूरा करने से इच्छा कभी शांत नहीं होती; यह तो आग में घी डालने के समान है। हम प्रकृति के सहायक के तौर पर नहीं, बल्कि उसके प्रतिस्पर्धी के तौर पर पैदा हुए हैं। हम उसके स्वामी हैं, लेकिन हम खुद को ही जकड़ लेते हैं।

हर पल प्रकृति यह साबित कर रही है कि हम गुलाम हैं, आज़ाद नहीं। इसलिए, मानव जीवन और सम्पूर्ण प्रकृति स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष कर रही है। इस तरह, अच्छा और बुरा एक ही चीज़ है; अंतर उनके प्रकार का नहीं, बल्कि उनके स्तर का है। यह वेदांत की नैतिकता की देन है—सबके लिए एक जैसी समानता। कोई भी व्यक्ति वेदांती नहीं हो सकता अगर वह किसी के लिए भी—चाहे वह मानसिक, शारीरिक या आध्यात्मिक हो—किसी खास विशेषाधिकार को मानता हो; किसी के लिए भी कोई विशेषाधिकार नहीं है। प्रत्येक मनुष्य में वही शक्ति है—किसी में वह ज्यादा दिखती है, तो किसी में कम; हर किसी में वही क्षमता विद्यमान है।

स्वयं को शुद्ध करो, दुनिया अपने आप शुद्ध हो जाएगी। मैं दूसरों में बुराई क्यों देखूँ? जब तक मैं स्वयं बुरा नहीं हूँ, तब तक मुझे बुराई नहीं दिख सकती। जब तक मैं कमज़ोर नहीं हूँ, तब तक मैं दुखी नहीं हो सकता। जो चीज़ें बचपन में मुझे दुखी करती थीं, वे अब ऐसा नहीं करतीं। देखने वाला बदल गया है, इसलिए जो चीज़ देखी जा रही है, उसका बदलना भी तय है।

अगर आपने यह जान लिया तो सब कुछ जाना लिया। वेदांत दर्शन का सार है "संसार का त्याग"। इसके अनुसार, इस ब्रह्मांड में केवल एक ही चीज़ वास्तविक है, जिसे यह 'ब्रह्म' कहता है। बाकी सब कुछ मिथ्या है, जो माया की शक्ति से, ब्रह्म से ही बना या प्रकट हुआ है। ब्रह्म तक वापस पहुँचना ही हमारा लक्ष्य है। अगर हम इस माया और अज्ञानता से छुटकारा पा लें, तो हम वही बन जाते हैं जो हम वास्तविक में हैं। हम जो भी कार्य करते हैं या जो भी सोचते हैं, उससे मन पर एक छाप पड़ती है जिसे "संस्कार" कहा जाता है। इन छापों का कुल योग एक प्रबल शक्ति बन जाता है जो मृत्यु के पश्चात् मनुष्य को अगली दिशा प्रदान करती है। जब मनुष्य मरता है, तो शरीर छूट जाता है और वापस पंचतत्त्वों में मिल जाता है। लेकिन संस्कार मन के साथ बने रहते हैं, इसलिए वह नष्ट नहीं होते। इसलिए इस संसार में हमारे सभी कर्म हमारी अगली दिशा तय करते हैं। हमें कौन यहाँ लाता है? हमारे पिछले कर्म। हमें कौन यहाँ से आगे ले जाता है? हमारे अपने कर्म। अतः यह दर्शन हमें सिखाता है कि हम अपने ही कर्मों से बँधे हुए हैं। मानवीय आत्मा अपने संस्कारों के अनुसार निचले और ऊँचे रूपों में घूमती रहती है, एक रूप से दूसरे रूप में जाती रहती है, जबकि उद्देश्य स्वतंत्रता है।

कुछ लोग संसार के सुख-भोग से ऊपर कुछ नहीं प्राप्त कर पाते, लेकिन जो लोग ऊँचा उठना चाहते हैं, उन्हें पता चलता है कि उनके सुख कभी अंतिम नहीं होते, बल्कि वे बस रास्ते की वस्तु हैं। जब तक कोई इच्छा या चाहत है, यह पक्का संकेत है कि अभी भी कोई कमी है। एक पूर्ण और मुक्त सत्ता में कोई इच्छा नहीं हो सकती। ईश्वर कुछ भी नहीं चाह सकता। अगर वह कुछ चाहता है, तो वह ईश्वर नहीं हो सकता।

1. वेदांत-आधारित जीवन शैली: वेदांत की मुख्य बात यह है कि माता-पिता, कर्मचारी, व्यापारी, छात्र या नागरिक के तौर पर अपनी आम जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी आध्यात्मिक विकास किया जा सकता है। चुनौती जीवन से दूर भागने की नहीं, बल्कि अधिक जागरूकता, समझदारी और निस्वार्थ भाव से जीने की है। इसके लिए ज़रूरी है कि आप अपने कर्तव्य बिना किसी निजी लाभ की चाहत के, समाज में योगदान के तौर पर पूरी ईमानदारी से निभाएँ। व्यावहारिक आदतों में शामिल हैं:

- सत्य आचरण अपनाएं
- क्रोध और लालच पर काबू रखें
- सादगी से जीवन व्यतीत करें

2. सफलता और असफलता को संतुलन के साथ स्वीकार करें: वेदांत समभाव (संतुलित मन की स्थिति) को बढ़ावा देता है। जब सब कुछ अनुकूल हो, तो अहंकार से बचें। जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों, तो निराशा से बचें। अपना कर्तव्य निभाते हुए दोनों स्थितियों से सीखें।

3. व्यक्तिगत फायदे की चाह के बिना अपने काम करना: कर्म प्रधान है और लाभ और हानि कर्मफल के दो रूप हैं। वे अच्छे

या बुरे कभी नहीं होते। वास्तविकता यह है कि आप यह मानने लगेंगे कि आपकी अहमियत या खुशी कर्म के परिणाम पर निर्भर नहीं करती है। कोशिश और परिणाम को अलग-अलग रखें। आप अपनी तैयारी, प्रयास, ईमानदारी और कौशल को नियंत्रित कर सकते हैं - परिणाम को नहीं। बेहतरीन काम पर ध्यान दें, प्रशंसा पर नहीं।

यह सोचने के बजाय:

- "क्या मेरा प्रमोशन होगा?"
- "क्या लोग मेरी तारीफ करेंगे?"

यह सोचें:

- "क्या मैं इसे अपनी पूरी क्षमता से कर रहा हूँ?"
- "क्या यह काम मेरे मूल्यों के मुताबिक है?"

4. दूसरों की सेवा करें और काम का फल ईश्वर को समर्पित करें: अपने काम को सेवा के रूप में देखें। लोगों की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची उपासना है।

5. सफलता का मापन: अगर आप सच्चाई, मूल्यों और सिद्धांतों पर अडिग रहे, तो संस्कारों का विकास होगा। यही वास्तविक विकास और सच्ची सफलता है। यही वह धन है जो सदैव आपके साथ रहेगा। कदाचित आपके संसार से जाने के बाद भी। जीवन का सही लक्ष्य आत्मा की शुद्धि एवं चरित्र का विकास ही है। अपने मन को उच्च विचारों से भरें, उन्हें रोज़ सुनें, महीनों तक उन पर सोचो। नाकामियों की परवाह मत करो, वे तो स्वाभाविक हैं। वे ही तो जीवन की सुंदरता हैं। संघर्ष और गलतियों की भी चिंता मत करो। अपने आदर्श को हज़ार बार अपनाओ और अगर तुम हज़ार बार भी नाकाम हो जाओ, तो फिर भी एक बार पुनः कोशिश करो। इसी तरह आगे बढ़ते रहो। आत्मा के सामने अनंत जीवन है; निरंतर प्रयास करते रहो और तुम अपना लक्ष्य प्राप्त कर लोगे।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



फैशन स्टडीज – फैशन और परिधान की समझ

विनोद कुमार शर्मा, सहायक प्राध्यापक, फैशन डिजाइन विभाग

फैशन और परिधान के वास्तविक अर्थ, उनके अंतर तथा विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में उनकी भूमिका को समझना हम सभी के लिए आवश्यक है। हमें यह जानना चाहिए कि हम प्रतिदिन किस प्रकार के वस्त्र पहनते हैं, स्वयं को किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं और हमारा पहनावा हमारी पहचान को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है। इन विषयों पर भारतीय समाज में अभी भी सीमित समझ और अनेक भ्रान्तियाँ विद्यमान हैं। काफ़ी समय से दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, मानवविज्ञानी व समाजशास्त्री इस विषय पर गहन सोच विचार रखते रहे हैं। फैशन सिद्धांतों पर ऐसे अनेकों विचार और पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ विचार व संसाधन आपके समक्ष हैं।

मध्य पूर्व देशों में महिलाएँ इतना खुला बुर्का पहनती हैं कि शरीर का एक भी इंच हिस्सा दिखाई नहीं देता। इसके उलट, न्यूगिनी के पर्वतीय क्षेत्रों में कुछ पुरुष पूरी तरह नग्न रहते हैं; वे बस केवल जननांग-आवरण पहनते हैं और बालों में चमकीले रंगों के पंखों की डोरी लगाते हैं। इन दोनों चरम स्थितियों के बीच, हर संस्कृति के अपने रीति-रिवाज और पहनावे के नियम होते हैं।

संसार में बहुत कम समाज ऐसे हैं जहाँ लोग बिल्कुल भी कपड़े नहीं पहनते, और कोई भी समाज ऐसा नहीं है जो किसी न किसी तरह से अपने रंग-रूप को न सँवारता हो—चाहे वह बालों को सँवारना हो, कॉस्मेटिक्स का इस्तेमाल हो, टैटू बनवाना हो, गहने पहनना हो या सजावट का कोई और तरीका हो। यहाँ "फैशन" मुख्य शब्द है; क्रिया (verb) के तौर पर इसका मतलब है "बनाना" या "रचना करना"। दुनिया भर में लोग अपनी पहचान बनाने के लिए कपड़ों और सजावट का इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि कपड़े व्यावहारिक कारणों (जैसे गर्माहट देना या सुरक्षा देना) और सामाजिक कारणों (जैसे शालीनता और मर्यादा के सामाजिक नियमों का पालन करना) से पहने जाते हैं। किन्तु केवल इन कारणों से यह पूरी तरह नहीं समझा जा सकता कि पहनने वाले और उसे देखने वाले, दोनों के लिए वस्त्रों का क्या महत्व है। अतः पहनावा और सजावट मानवीय व्यवहार की एक सार्वभौमिक विशेषता है (भाषा और औज़ार

बनाने की तरह) और लंबे समय से यह बहुत दिलचस्पी का विषय रहा है।

हालाँकि, कई वर्षों तक पहनावे और सजावट का अध्ययन (आमतौर पर "कॉस्ट्यूम हिस्ट्री" या वेशभूषा के इतिहास के तहत) मुख्य रूप से वर्णनात्मक और पुरानी चीज़ों के संग्रह तक ही सीमित था। उन्नीसवीं सदी में ऐतिहासिक वेशभूषा या लोक-वेशभूषा पर शानदार सचित्र किताबें छपने से पहनावे के प्रति लोगों की गहरी दिलचस्पी का पता चला, लेकिन उनमें सीमित दायरे के सवाल ही पूछे गए। बीसवीं सदी में संग्रहालयों में वेशभूषा के संग्रह बनने से ऐतिहासिक चीज़ों को सहेजने की सराहनीय भावना दिखी, लेकिन ऐसे संग्रहों की प्रदर्शनी अक्सर अतीत को दिखाने की एक तरह की रूमानी सोच से आगे नहीं बढ़ पाई।

साठ के दशक में फ़्रांसीसी दार्शनिक व संकेत-विज्ञानी (सिमियोटिशन) रोलैंड बार्थेस ने पहली बार फैशन और फैशन पत्रिकाओं का संकेत-विज्ञान आधारित विश्लेषण किया। अस्सी के दशक में उभरा एक नया क्षेत्र- 'फ़ैशन स्टडीज़', फैशन को उसके सबसे व्यापक अर्थ में देखता है और शरीर(बॉडी) से जुड़ी पहचान के सांस्कृतिक निर्माण की पड़ताल करता है। यह इस एहसास से पैदा हुआ कि पहनावा (ड्रेस) और सजावट (एडोर्नमेंट) पारंपरिक वेशभूषा के अध्ययन से कहीं ज़्यादा अर्थ और समझ प्रदान करते हैं।

फ़ैशन स्टडीज़, जिसे कभी-कभी "न्यूफ़ैशन हिस्ट्री" भी कहा जाता है, मुख्य रूप से एक अंतर-विषयक - कई विषयों को मिलाने वाला (इंटरडिसिप्लिनरी) क्षेत्र है। यह कई नज़रियों से मिली जानकारी और विश्लेषण को अपने में समाहित करता है - इसमें एंथ्रोपोलॉजी (मानव-विज्ञान), कला का इतिहास, सांस्कृतिक और बौद्धिक इतिहास, अर्थशास्त्र, जेंडर और क्वीर स्टडीज़, भौतिक संस्कृति और अन्य क्षेत्रों (जिनमें से कुछ नए उभर रहे हैं) को शामिल किया जाता है। 1997 में शुरू हुए 'फ़ैशन थ्योरी: द जर्नल ऑफ़ ड्रेस, बॉडी एंड कल्चर' ने इस क्षेत्र को मान्यता दिलाने और इसके तरीकों और जानकारीयों को

तेज़ी से बढ़ते एकेडमिक दर्शकों तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई है। इस तेज़ी से हो रहे विकास और बौद्धिक सक्रियता ने फ़ैशन को अध्ययन के एक विषय के तौर पर लोगों के बीच लोकप्रिय बनाया है। हर साल फ़ैशन पर नई किताबें छपती हैं; कुछ विद्वानों के लिए होती हैं तो कुछ आम लोगों के लिए। ये किताबें फ़ैशन को एक सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक घटना के तौर पर गंभीरता से लेती हैं।

कुछ विचारों के अनुसार फ़ैशन और पोशाक/कपड़े दो अलग-अलग अवधारणाएं और संस्थाएं हैं जिन्हें अलग-अलग अध्ययन किया जा सकता है या किया जाना चाहिए। इसकी मान्यता है कि फ़ैशन की एक समाज शास्त्रीय जांच होनी चाहिए, और यह फ़ैशन को 'संस्थानों के एक सिस्टम' के तौर पर देखती है, जो फ़ैशन के कॉन्सेप्ट और फ़ैशन की प्रैक्टिस/घटना, दोनों को पैदा करता है। जैसे आर्ट की सोशियोलॉजी, आर्टिस्टिक प्रोडक्शन की प्रैक्टिस और संस्थानों का अध्ययन करती है, वैसे ही ये भी लोगों के दिमाग में मौजूद फ़ैशन के विश्वास के सामाजिक निर्माण प्रोसेस से जुड़ी है। यह विश्वास धीरे-धीरे अपनी एक अलग पहचान और वजूद बना लेता है। कपड़ों की चीज़ों को फ़ैशन का दर्जा पाने के लिए बदलाव की प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। इस विचारधारा का मुख्य फ़ोकस फ़ैशन के उत्पादन, वितरण, फैलाव, स्वीकार्यता, अपनाए जाने और इस्तेमाल से जुड़े सामाजिक पहलू पर है, ताकि हम फ़ैशन के उत्पादन और इस्तेमाल को कपड़ों के उत्पादन और इस्तेमाल से अलग करके समझ सकें।

(शेष अगले अंक में)

निफ्ट कांगड़ा परिवार से

फैशन एजुकेशन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

डॉ अमन कुमार, सहायक प्राध्यापक, फैशन टेक्नोलॉजी



कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) फैशन एजुकेशन में क्रिएटिविटी और टेक्नोलॉजी को जोड़कर बदलाव ला रहा है यह छात्रों को ट्रेड्स एनालाइज करने, तेजी से एक्सपेरिमेंट करने और इंडस्ट्री से जुड़े डिजिटल स्किल्स सीखने में मदद करता है, साथ ही सांस्कृतिक और इमोशनल कॉन्टेक्ट के लिए मानव निर्णय (ह्यूमन जजमेंट) पर भी भरोसा करता है। यह पर्सनलाइज्ड लर्निंग, वर्चुअल सिमुलेशन और सस्टेनेबल डिज़ाइन प्रैक्टिसेज को इनेबल करता है, जिससे फ्यूचर डिज़ाइनर्स टेक-ड्रिवन ग्लोबल मार्केट के लिए तैयार हो सकें।

फैशन एजुकेशन में एआई की मुख्य भूमिकाएँ:

1. डिज़ाइन प्रक्रिया को बढ़ावा देना
 - ट्रेड एनालिसिस और फ़ोरकास्टिंग: एआई एल्गोरिदम सोशल मीडिया, रिटेल डेटा और सांस्कृतिक बदलावों का विश्लेषण करके फैशन ट्रेड्स का अनुमान लगाते हैं।
 - क्रिएटिव असिस्टेंस: टूल्स डिज़ाइन वैरिएशंस, कलर पैलेट्स और फैब्रिक कॉम्बिनेशन जनरेट करते हैं, जिससे रिपिटेटिव मैनुअल काम कम हो जाता है।
 - वर्चुअल प्रोटोटाइपिंग: स्टूडेंट्स डिजिटल रूप में गारमेंट ड्रैपिंग, स्टीचिंग और स्टाइलिंग टेस्ट कर सकते हैं, इससे पहले कि असली प्रोडक्शन करें।
2. व्यक्तिगत सीखना और शिक्षाशास्त्र
 - अनुकूलित लर्निंग मॉड्यूल: एआई छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों के हिसाब से कोर्सवर्क तैयार करता है और रीयल-टाइम फीडबैक देता है।
 - कौशल विकास: एआई-चालित प्लेटफॉर्म शुरुआती डिज़ाइनरों को प्रोडक्ट फॉर्म स्केच करने और विचारों को बेहतर ढंग से संप्रेषित करने में मदद करता है।
 - गेमिफ़ाइड लर्निंग: वर्चुअल सिमुलेशन और इंटरैक्टिव

मॉड्यूल रचनात्मकता और सहभागिता बढ़ाते हैं।

3. उद्योग समावेशन

- उपभोक्ता व्यवहार की भविष्यवाणी: एआई छात्रों को मार्केट डायनेमिक्स और ग्राहक पसंद समझने के लिए तैयार करता है।
- सतत प्रथाएँ: एल्गोरिदम सप्लाय चैन I को ऑप्टिमाइज़ करते हैं, अपशिष्ट कम करते हैं और इको-फ्रेंडली डिज़ाइन को बढ़ावा देते हैं।
- क्रॉस-डिसेप्लिनरी एक्सपोज़र: फैशन शिक्षा अब तकनीक, सततता और बिज़नेस एनालिटिक्स के साथ ओवरलैप होती है।

फैशन शिक्षा में एआई एवं एमएल उपकरणों के प्रमुख उदाहरण

फैशन शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) और मशीन लर्निंग (Machine Learning-ML) का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक डेटा-आधारित, वैयक्तिकृत, रचनात्मक और उद्योग-केंद्रित बनाने में किया जा रहा है। प्रवृत्ति विश्लेषण के क्षेत्र में *Heuritech* सोशल मीडिया और दृश्य सामग्री का विश्लेषण करके फैशन प्रवृत्तियों के पूर्वानुमान में सहायता करता है, जबकि *EDITED* वास्तविक समय के खुदरा एवं फैशन आँकड़ों के आधार पर प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है। *WGSN* फैशन एवं जीवनशैली से संबंधित पूर्वानुमानात्मक अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है तथा *Fashion Brain* फैशन डेटा के विश्लेषण के माध्यम से संभावित प्रवृत्तियों की पहचान में सहायता करता है। इसी प्रकार, *Metail* एआई-आधारित वर्चुअल फिटिंग तथा व्यक्तिगत फैशन अनुभवों के लिए उपयोग किया जाता है।

वैयक्तिकृत अधिगम एवं आभासी सिमुलेशन के क्षेत्र में *Knewton Alta* विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर

व्यक्तिगत अध्ययन योजनाएँ एवं संसाधन उपलब्ध कराता है। *DreamBox Learning* अनुकूली अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करता है, जबकि *Squirrel AI* वास्तविक समय की प्रतिक्रिया के आधार पर व्यक्तिगत अधिगम-पथ विकसित करता है। *Labster* आभासी वास्तविकता (VR) आधारित सिमुलेशन के माध्यम से व्यावहारिक STEM प्रयोगों का अनुभव प्रदान करता है।

नवोदित डिजाइनरों के लिए रचनात्मक सहायता के क्षेत्र में *DeepArt* एआई की सहायता से छवियों को विभिन्न कलात्मक शैलियों में परिवर्तित करता है। *Runway ML* डिजाइन, दृश्य सामग्री और एनीमेशन के लिए एआई-आधारित रचनात्मक उपकरण उपलब्ध कराता है। *Canva Magic Resize* डिजाइन के विभिन्न प्रारूपों के अनुरूप आकार में स्वतः परिवर्तन की सुविधा देता है, जबकि *Fotor* एआई-आधारित फोटो संपादन तथा *Daz 3D* त्रि-आयामी डिजाइन निर्माण में सहायता प्रदान करते हैं।

वर्चुअल ट्राय-ऑन एवं ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) फैशन शिक्षा और फैशन व्यवसाय के बीच तकनीकी जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा है। *Obsess* त्रि-आयामी वर्चुअल स्टोर और AR-आधारित शॉपिंग अनुभव प्रदान करता है। *Zyler* उपयोगकर्ता की तस्वीरों के आधार पर परिधान एवं एक्सेसरीज के वर्चुअल ट्राय-ऑन की सुविधा देता है, जबकि *Vue.ai* व्यक्तिगत स्टाइलिंग एवं आउटफिट सुझाव प्रदान करता है। *Wannaby* वास्तविक समय में AR-आधारित फुटवियर ट्राय-ऑन की सुविधा देता है तथा *Snapchat AR* ब्रांडों के लिए वर्चुअल ट्राय-ऑन और विभिन्न AR फिल्टर उपलब्ध कराता है।

उपभोक्ता व्यवहार के पूर्वानुमान में भी एआई एवं एमएल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। *Google Cloud AI* ग्राहक डेटा का विश्लेषण करके खरीदारी के पैटर्न को समझने और उनके पूर्वानुमान में सहायता करता है। *IBM Watson* उपभोक्ता प्राथमिकताओं तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण में उपयोगी है। *Kissmetrics* उपभोक्ता गतिविधियों के विश्लेषण के माध्यम से व्यवहारगत रुझानों की पहचान करता है, जबकि *DataRobot* एआई मॉडल के माध्यम से उपभोक्ता व्यवहार के पूर्वानुमान में सहायता करता है। इसी प्रकार, *Salesforce Einstein* व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव विकसित करने के लिए ग्राहक व्यवहार से संबंधित पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण प्रदान करता है।

आपूर्ति शृंखला अनुकूलन एवं स्थिरता के क्षेत्र में *Blue Yonder* पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण के माध्यम से आपूर्ति शृंखला की दक्षता और अनुकूलन क्षमता बढ़ाने में सहायता करता है। *IBM Sterling* आपूर्ति शृंखला में पारदर्शिता एवं ट्रेसिबिलिटी को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। *Coupa Supply Chain Design* आपूर्ति शृंखला के पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन करने तथा उसे कम करने में सहायता करता है। *Logility* लागत एवं अपशिष्ट को कम करने के उद्देश्य से

आपूर्ति शृंखला के अनुकूलन में योगदान देता है, जबकि *Infor Nexus* सहयोग, पारदर्शिता और उत्तरदायी सोर्सिंग को बढ़ावा देता है।

नैतिक एवं टिकाऊ फैशन के संदर्भ में *Higg Index* पर्यावरणीय एवं सामाजिक प्रभावों के मूल्यांकन में उपयोगी है। *Sustainability-X* विभिन्न सामग्रियों की स्थिरता का आकलन करने में सहायता करता है। *StyleSage* फैशन प्रवृत्तियों के साथ स्थिरता संबंधी मापदंडों का विश्लेषण करता है। इसके अतिरिक्त, *Circular Fashion* परिपत्र अर्थव्यवस्था (Circular Economy) की अवधारणाओं और प्रथाओं को बढ़ावा देता है, जबकि *Eco-Age* नैतिक एवं टिकाऊ फैशन प्रथाओं से संबंधित जानकारी और मार्गदर्शन उपलब्ध कराता है।

अंततः, उद्योग-सापेक्ष कौशल विकास में एआई

आधारित शिक्षण प्रणालियाँ विद्यार्थियों को बदलती औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने में सहायता करती हैं। *Moodle* वैयक्तिकृत अधिगम अनुभवों के लिए एआई-आधारित सुविधाएँ प्रदान करता है। *Coursera* उद्योग-विशिष्ट कौशल के अनुरूप व्यक्तिगत अधिगम-पथ उपलब्ध कराता है, जबकि *Udemy* उपयोगकर्ता की रुचियों के आधार पर पाठ्यक्रमों की अनुशंसा करता है। *LinkedIn Learning* पेशेवर कौशल के विकास के लिए अनुकूलित अधिगम अनुभव प्रदान करता है तथा *edX* करियर विकास एवं उन्नति के लिए वैयक्तिकृत शिक्षण अवसर उपलब्ध कराता है।

स्रोत: Priyadarshini, V. & Munshi, R. R. (2025). *AI and Machine Learning Tools in Fashion Pedagogy: An Empirical Study*. IFFTI Annual Proceedings, Vol. 4, March 2025.

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



हिमाचल प्रदेश की यात्रा

विशाल पत्रवाल - सहायक, परिसर शैक्षणिक समन्वयक

पिछली गर्मियों की छुट्टियों में मुझे हिमाचल प्रदेश जाने का अवसर मिला। हिमाचल प्रदेश भारत के सबसे सुंदर पर्वतीय राज्यों में से एक है। अपनी प्राकृतिक सुंदरता, हिमाच्छादित पर्वतों, हरे-भरे वनों, कल-कल बहती नदियों तथा शांत वातावरण के कारण यह राज्य देश-विदेश के लाखों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस यात्रा को लेकर मैं अत्यंत उत्साहित था, क्योंकि यह मेरा हिमाचल प्रदेश का पहला भ्रमण था।

मैं अपने परिवार के साथ शिमला पहुँचा। वहाँ की शीतल एवं ताज़गीभरी वायु ने हमारा स्वागत किया। चारों ओर फैले ऊँचे-ऊँचे पर्वत तथा देवदार के सघन वृक्ष शिमला की प्राकृतिक छटा को और भी मनोहारी बना रहे थे। हमने 'द रिज' और 'मॉल रोड' का भ्रमण किया। मॉल रोड पर टहलते हुए स्थानीय दुकानों से कुछ स्मृति-चिह्न खरीदे तथा वहाँ के स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया। रात्रि के समय जगमगाती रोशनियों से सजा शिमला किसी स्वप्नलोक से कम नहीं लग रहा था। अगले दिन हम मनाली के लिए रवाना हुए। मार्ग में बहती ब्यास नदी और हरे-भरे वन यात्रा को अत्यंत आनंददायक बना रहे थे। प्रकृति की अनुपम छटा मन को मोह लेने वाली थी। मनाली पहुँचकर हमने हिडिंबा देवी मंदिर के दर्शन किए। मंदिर की विशिष्ट वास्तुकला तथा उसके चारों ओर फैले देवदार के वृक्ष अत्यंत आकर्षक प्रतीत हो रहे थे।

इसके पश्चात हम सोलंग घाटी पहुँचे, जो अपने साहसिक खेलों के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ मुझे पैराग्लाइडिंग का रोमांचक अनुभव प्राप्त हुआ। ऊँचाई से दिखाई देने वाली पर्वत-श्रृंखलाएँ, हरित घाटियाँ और प्राकृतिक सौंदर्य का विहंगम दृश्य अविस्मरणीय था। हमने बर्फ से आच्छादित क्षेत्रों में खेलकूद का आनंद लिया तथा अनेक सुंदर चित्र भी खींचे।

यात्रा के दौरान हमें रोहतांग दर्रे का भी भ्रमण करने का अवसर मिला। चारों ओर फैली बर्फ की श्वेत चादर, बादलों से आच्छादित पर्वत तथा शीतल वातावरण किसी स्वर्गिक दृश्य का आभास करा रहे थे। वहाँ की प्राकृतिक शांति ने मन को गहरा सुकून प्रदान किया।

हिमाचल प्रदेश की राजभाषा हिंदी है, जबकि यहाँ कांगड़ी, मंडयाली, कुल्लूवी तथा अन्य अनेक पहाड़ी बोलियाँ भी प्रचलित हैं। यात्रा के दौरान हमें स्थानीय लोगों से मिलने तथा उनकी संस्कृति और जीवनशैली को निकट से जानने का अवसर मिला। उनका सरल, विनम्र एवं अतिथि-सत्कारपूर्ण व्यवहार हमारे मन को अत्यंत प्रभावित कर गया।

इस यात्रा के दौरान हमने पारंपरिक हिमाचली व्यंजनों का भी स्वाद लिया। उनकी सादगी, पौष्टिकता और विशिष्ट स्वाद ने हमें विशेष रूप से आकर्षित किया। सायंकाल पर्वतों के बीच सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य अत्यंत मोहक प्रतीत होता था। सूर्य की सुनहरी किरणों से आलोकित पर्वत-श्रृंखलाएँ और शीतल हवाएँ इस यात्रा को और भी यादगार बना रही थीं।

यह यात्रा केवल मनोरंजन का माध्यम ही नहीं, बल्कि एक शिक्षाप्रद अनुभव भी सिद्ध हुई। इसने मुझे प्रकृति के महत्व, पर्यावरण संरक्षण तथा विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना का महत्व समझाया। हिमाचल प्रदेश की मनोहारी वादियाँ, स्वच्छ वातावरण, प्राकृतिक सौंदर्य और वहाँ के लोगों का आत्मीय स्नेह सदैव मेरी स्मृतियों में अंकित रहेगा। निःसंदेह, यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे सुखद, प्रेरणादायक और अविस्मरणीय यात्राओं में से एक रही, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकूँगा।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



कांगड़ा : हिमालय की गोद में बसती संस्कृति, शौर्य और प्रकृति की अनुपम धरोहर

सुमित कुमार, सहायक प्राध्यापक

जब हिमालय की शांत वादियाँ अपनी हरित चादर ओढ़कर सूर्योदय का स्वागत करती हैं, तब हिमाचल प्रदेश का कांगड़ा अपनी सहज गरिमा के साथ प्रकृति और इतिहास का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

धौलाधार पर्वतमाला की हिमाच्छादित चोटियाँ, कल-कल बहती नदियाँ, देवदार और चीड़ के सघन वन तथा प्राचीन मंदिरों की घंटियों की मधुर ध्वनि कांगड़ा को केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत विरासत बना देती हैं।

कांगड़ा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन और गौरवपूर्ण है। यह क्षेत्र प्राचीन काल में 'नगरकोट' के नाम से प्रसिद्ध था तथा कटोच वंश की वीरता और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमुख केन्द्र रहा। यहाँ स्थित कांगड़ा दुर्ग भारत के सबसे प्राचीन दुर्गों में गिना जाता है।

अनेक विदेशी आक्रमणों और प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद यह दुर्ग आज भी इतिहास के स्वर्णिम अध्यायों का मौन साक्षी बना खड़ा है। इसकी प्रत्येक शिला साहस, स्वाभिमान और संघर्ष की अमिट गाथा सुनाती प्रतीत होती है।

कांगड़ा की सांस्कृतिक पहचान उसकी लोकपरम्पराओं में सजीव रूप से दिखाई देती है। यहाँ की कांगड़ी भाषा, लोकगीत, पारम्परिक नृत्य, मेलों और उत्सवों में पर्वतीय जीवन की सरलता तथा आत्मीयता झलकती है। यहाँ के लोगों का सहज व्यवहार, अतिथि-सत्कार और प्रकृति के प्रति सम्मान इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान है। धार्मिक आस्था और लोक संस्कृति का अद्भुत समन्वय कांगड़ा की आत्मा को और अधिक समृद्ध बनाता है।

कांगड़ा केवल धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि कला के क्षेत्र में भी विश्वभर में प्रतिष्ठित है।

कांगड़ा चित्रकला भारतीय लघुचित्र परम्परा की अत्यन्त कोमल, भावपूर्ण और सौन्दर्यप्रधान शैली मानी जाती है।

इन चित्रों में प्रकृति, भक्ति और मानवीय भावनाओं का अत्यन्त

सूक्ष्म एवं सजीव चित्रण मिलता है। रंगों की मधुरता और रेखाओं की कोमलता इस कला को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य रत्न बनाती है।

प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से कांगड़ा किसी स्वप्नलोक से कम नहीं है। धौलाधार की हिमाच्छादित चोटियाँ, विस्तृत चाय-बागान, निर्मल जलधाराएँ और हरित घाटियाँ यहाँ आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आत्मिक शान्ति का अनुभव कराती हैं। वर्षा ऋतु में जब बादल पर्वतों को आलिंगन में लेते हैं, तब सम्पूर्ण घाटी मानो किसी चित्रकार की सजीव कृति बन जाती है। प्रकृति का यह अनुपम वैभव प्रत्येक ऋतु में अपना अलग आकर्षण प्रस्तुत करता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि कांगड़ा की प्राकृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक धरोहर और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल शासन का ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व बने। यदि हम अपनी विरासत को सहेजकर अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का संकल्प लें, तभी यह अनुपम धरोहर अपनी मूल गरिमा के साथ सदैव जीवित रह सकेगी।

कांगड़ा वास्तव में केवल हिमाचल प्रदेश का एक जनपद नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, प्रकृति और इतिहास का ऐसा उज्ज्वल अध्याय है, जिसकी प्रत्येक घाटी, प्रत्येक पर्वत और प्रत्येक स्मारक भारत की सनातन सभ्यता की गौरवगाथा का अमूल्य प्रतीक है।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



कृत्रिम बुद्धिमत्ता: आधुनिक युग की क्रांति

वैशाली- कनिष्ठ सहायक, फैशन प्रबंधन अध्ययन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैसा कि शब्द से ही पता चलता है, बुद्धिमत्ता जो कृत्रिम रूप से बनाई जाती है ताकि मशीनों को बुद्धिमत्ता के प्रसंग में, मनुष्यों की तरह व्यवहार करने के लिए बनाया जा सके। आज के समय में ए.आई. हमारे जीवन का हिस्सा बन चुका है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस एक ऐसी तकनीक है, जो मशीनों को इंसानों जैसी सोच, समझ और निर्णय लेने की क्षमता देती है। यह मानव बुद्धि और समझ की नकल करती है।

आसान भाषा में कहें तो ए. आई. वह ज्ञान है, जो मशीनों को सीखने और काम करने के काबिल बनाता है। विकासशील तकनीक के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक वरदान साबित हो रही है। यह मानव की ही भांति सोच, विश्लेषण, समस्या को सुलझाने की क्षमता, आवाज़ पहचानने की क्षमता आदि रखती है। जैसे स्मार्टफोन में इस्तेमाल होने वाले वॉयस असिस्टेंट (Voice Assistant) में, ऑनलाइन खरीदारी, सोशल मीडिया पर हमें जिन खबरों और विज्ञापनों की प्राथमिकता देते हैं, वही हमें दिखाई देते हैं, ये सब ए. आई. की वजह से हैं। अतः शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और ट्रांसपोर्ट और अन्य क्षेत्रों में ए. आई. ने क्रांति ला दी है।

इतिहास व आविष्कार :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए. आई.) का जन्म विज्ञान की दुनिया में, एक नई क्रांति लेकर आया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा नई नहीं है। इसकी जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हुई हैं। इसकी शुरुआत '1940-50' के दशक में हुई जब वैज्ञानिक 'एलन ट्यूरिंग' ने मशीनों को मनुष्य जैसा सोचने की कल्पना की थी। इसके बाद सन् 1956 में अमेरिकी वैज्ञानिक 'जॉन मैकार्थी' ने अमेरिका के डार्टमाउथ सम्मेलन में पहली बार "आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस" शब्द का प्रयोग किया। इसलिए 1956 को ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जन्म वर्ष माना जाता है।

उस समय कंप्यूटर बहुत छोटे और कमजोर थे इसलिए उसमें केवल आसान गणितीय सवाल हल करना और साधारण खेल खेलना ही संभव था। समय के साथ कंप्यूटर और तकनीक में तेज़ी से बदलाव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी आगे बढ़ती गई।

शुरु में इसका विकास धीमा था लेकिन सन् 2000 के बाद जब इंटरनेट और तेज कंप्यूटर आए तो ए. आई. ने भी तेजी से प्रगति की। इस प्रकार भले ही ए. आई. का जन्म 1956 में हुआ था, लेकिन इसका असली विकास आज आधुनिक समय में दिखाई देता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदे :-

मशीन में मानव बुद्धि को विकसित करने के कारण इससे कार्य को सरल बनने के लिए कंप्यूटर विज्ञान ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। अतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता निम्नलिखित प्रकार से हमारी सहायता करती है :-

- 1) शिक्षा के क्षेत्र में यह तेजी से सीखने के विभिन्न तरीकों के साथ ऊपर उठने में मदद करती है, यह बड़ी मात्रा में आँकड़ों का तीव्र एवं सटीक विश्लेषण करने में सक्षम है।
- 2) चिकित्सा क्षेत्र में, यह विभिन्न तरह के निदान के लिए डेटा व्याख्या की सुविधा प्रदान करता है, कई रोगों के निदान और उपचार में चिकित्सकों की सहायता करती है। जिससे मरीजों को बेहतर इलाज मिल पाता है।
- 3) कृषि के क्षेत्र में, यह किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। आधुनिक सेंसर और ड्रोन के माध्यम से मिट्टी की नमी, तापमान और पोषक तत्वों का सही विश्लेषण भी AI टूल्स का उपयोग करके किया जा रहा है।
- 4) मनोरंजन की दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। फिल्म निर्माण में ए. आई. का उपयोग पटकथा लेखन, दृश्य संपादन और विशेष इफ़ेक्ट (वी एफ एक्स), गेमिंग उद्योग में, संगीत और कला के क्षेत्र में इसका उपयोग किया जा रहा है।
- 5) यह दैनिक गतिविधियों में भी काफी उपयोगी है। यह अनुसंधान और विकास क्षेत्र में बहुत मदद प्रदान करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की हानियाँ/नुकसान :-

ए. आई. के अनेकों फायदे होने के साथ-साथ इसके दुष्प्रभाव भी हैं। जो कि निम्नलिखित प्रकार से हैं :-

- 1) पर्यावरण के दृष्टिकोण से प्रौद्योगिकी, इसके अनुकूल नहीं है। यह ई-कचरे को जन्म देता है, जो सड़ने योग्य नहीं माना

जाता है। अगर इसे डंप भी किया जाता है तो भी यह तमाम तरह की विषाक्त भारी-भरकम धातुओं को छोड़ देता है। जिससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता समाप्त हो जाती है।

2) प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जरूरत से अधिक निर्भरता मनुष्य में आलस्य का कारण बनती जा रही है।

3) ए. आई. के कारण कुछ नौकरियां खत्म हो सकती हैं, जिससे बेरोजगारी बढ़ सकती है।

4) भविष्य में अनेक कार्यों में मशीनें मनुष्यों से अधिक दक्ष हो सकती हैं।

5) यदि इस तकनीक का उपयोग नकारात्मक मानसिकता के साथ किया जाता है, तो यह सम्पूर्ण मानव जाति को नष्ट भी कर सकता है।

6) यदि इसका विवेकपूर्ण उपयोग न किया जाए तो मानव के कौशल और रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

निष्कर्ष: -

भविष्य में ए. आई. और भी उन्नत होकर हमारे मनुष्य जीवन को सरल और बेहतर बनाएगा। हमें इसे सीखना चाहिए और इसके फायदे उठाते हुए सावधानी से इस्तेमाल करना चाहिए। सही दिशा में इस्तेमाल किए जाने पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए. आई.) इंसानों के लिए एक मददगार तकनीक साबित हो सकती है। जो शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और अन्य क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है।

अतः इसलिए ए. आई. को समझना और इसके साथ तालमेल बैठाना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है, ताकि हम इसके बेहतर फायदे उठा सकें और इसके नुकसान से बच सकें।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



“माँ” - मोह, महिमा और महत्व

श्रीमती, पुष्पा रानी, कनिष्ठ सहायक, स्टोर

दुनिया में बहुत से विषय ऐसे हैं जिनको समझ पाना कठिन ही नहीं, लगभग असंभव है। उन सभी विषयों में से हर एक दिल के लिए बहुत विशेष स्थान रखने वाला विषय है “माँ”

“माँ” महज एक शब्द नहीं है अपितु प्रत्येक जीव के अस्तित्व का सार भी होता है इस बात का यह मतलब बिल्कुल भी नहीं है कि किसी भी आदमी के जीवन में ‘पिता’ का स्थान कम होता है। परन्तु प्रत्येक जीव पिता से अधिक अपनी ‘माँ’ से अधिक भावनात्मक जुड़ाव अनुभव करता है। क्योंकि प्रत्येक जीव अपने जन्म के उपरांत जिस पहले संबंध से रूबरू होता है वो “माँ” से होता है। इसलिए प्रत्येक जीव अपने जीवन-पर्यंत जिस एक संबंध को अपने दिल के करीब मानता है, जिससे अपने जीवन की हर समस्या को साझा करता है और मानता है कि इस संबंध में मेरे लिए केवल प्यार, दुलार और अपनापन मिलेगा। “माँ” सभी के लिए एक ऐसा मोह होता है जिसका पता इससे लगता है कि जीवन की हर समस्या, दुख व परेशानी में जो पहला शब्द आपकी जुबान पर आता है वो होता है “माँ”।

‘माँ’ एक बच्चे के प्रति मोह, महिमा और महत्व के अनेकों उदाहरण हैं जिनसे कुछ हद तक ‘माँ’ के रिश्ते को समझने में शायद कुछ मदद मिलेगी। हमारे इतिहास में पूर्वकाल से लेकर अब तक बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जिससे आपको माँ के मोह, माँ की महिमा और माँ के महत्व के बारे में जानकारी मिल पाएगी। यदि हम बात करें “रामायण काल” की तो वहां पर भी माँ के तीनों रूपों का वर्णन मिलता है कौशल्या माँ जहाँ अपने पुत्र राम के 14 वर्ष के वनवास से अत्यंत दुखी हुईं और पुत्र वियोग का उनका दुख मातृ प्रेम का मार्मिक उदाहरण है वहीं राम जी को अपने आदेश को पूरा करने से नहीं रोककर उनको अपने पुत्र धर्म को निभाने में सहयोग किया था।

माँ कैकेयी ने अपने पुत्र भरत के हित में राम को वनवास और भरत को राज्याभिषेक के वरदान मांगे। यह मातृ मोह का एक प्रसिद्ध उदाहरण माना जाता है। माँ गांधारी अपने पुत्र दुर्योधन से अत्यधिक स्नेह करती थीं।

कई बार उनका यह मोह उन्हें पुत्र के दोषों के प्रति उदार बना देता था जिसने आगे चलकर दुर्योधन को अनेकों दोषों से ग्रस्त किया और महाभारत जैसे युद्ध के लिए मुख्य कारणों में से एक था माँ कुन्ती ने माँ गांधारी के विपरीत अपने सभी पुत्रों को स्नेह और प्यार के साथ उचित-अनुचित के बीच का अंतर बताकर उन सभी को आज्ञाकारी, धर्म के प्रति उदार और वीर योद्धा बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस युग में एक उदाहरण माँ यशोदा और कृष्णा जो पूरी तरह से एक माँ का अपने पुत्र के प्रति मोह, प्रेम और स्नेह का उदाहरण है। और भारतीय परंपरा में माँ यशोदा का कृष्णा के प्रति प्रेम और वात्सल्य माँ के मोह का अमर प्रतीक है। माँ जीजाबाई और छत्रपति शिवाजी महाराज को कौन भूला सकता है शिवा से छत्रपति शिवाजी महाराज मराठा साम्राज्य के संस्थापक तक ले जाने में माँ जीजाबाई का महत्वपूर्ण योगदान था आप कह सकते हैं कि यह कार्य माँ जीजाबाई के बिना होना असंभव था और उन्होंने अपने पुत्र शिवा के पालन-पोषण और संस्कारों में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका पुत्र के प्रति स्नेह और समर्पण मातृ प्रेम का श्रेष्ठ उदाहरण है।

और वही शिवाजी महाराज भी स्वीकार करते थे कि उनके चरित्र और नेतृत्व के निर्माण में उनकी माँ की महत्वपूर्ण भूमिका थी। अमेरिकन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन और उनकी माता मैन्सी लिंकन एक ऐसी उदाहरण हैं जिसमें स्वयं अब्राहम लिंकन अपनी माता के लिए कहते हैं “Whatever I am, or hope to be, I owe to my angel mother” अर्थात् मैं जो भी हूँ या बनने की आशा करता हूँ, उसका श्रेय अपनी “माँ” को देता हूँ क्योंकि वो “माँ” ही कर सकती है कि एक अति गरीब बच्चा दुनिया के सबसे बड़े देश का राष्ट्रपति बना। स्वामी विवेकानंद अपना माँ भुनेश्वरी देवी के लिए कहा था कि मेरे व्यक्तित्व और संस्कारों का प्रमुख स्रोत मेरी माँ ही है। उनकी माँ के दिए संस्कार ही थे जो विश्वभर में स्वामी विवेकानंद की ख्याति फैली हुई थी। महात्मा गांधी

भी अपने जीवन के प्रमुख गुण जैसे सत्य, संयम और धार्मिकता के संस्कारों के लिए यदि कोई जिम्मेदार है तो वो है मेरी माँ “पुतलीबाई जी” महात्मा गांधी के जीवन पर उनकी माँ की अमिट छाप थी।

वही पन्ना धाय जिसने उदय सिंह की जीवन रक्षा हेतु अपने पुत्र का बलिदान कर दिया था यद्यपि वे उदय सिंह की जन्मदायी माता नहीं थी, फिर भी मातृ स्नेह के कारण उन्होंने उनकी रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान दे दिया।

देखा आप सभी ने “ माँ” जीवन के हर पहलू में एक अलग स्थान रखती है। चाहे बच्चे की सभी बातों को मानना हो, चाहे बच्चे में संस्कारों को डालना हो, चाहे बच्चों के लिए बलिदान हो, सभी में ‘माँ’ का स्थान होता है। मेरा पूरा विश्वास है कि शायद ही कोई व्यक्ति दुनिया में होगा जिसका कोई न कोई ऐसा अनुभव ‘माँ’ के लिए होगा जो उसके जीवन प्रभाव की सोच व कार्यों में ना देखता हो।

“माँ” तुमको जीवन देती है।

“माँ” तुम्हारे लिए हजारों दुख सहती है।

“माँ” तुमको हर बार हँसकर ही देखती है।

“माँ” की बात सच मानकर, बच्चा चैन से सो जाता है।

“माँ” की जुबान नहीं उसकी आँखें सच को बतलाती है।

“माँ” भी तो इंसान है भले हम माने उसे भगवान है

उसको भी साथ तुम्हारा जरूरी है,

“माँ” तो माँ है न कि कोई मजबूरी है

निफ्ट कांगड़ा परिवार से

परिवार

रितु रानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी



भाई कमाने निकल गया,
बहन ससुराल चली गई।
एक ही घर के दो चिराग,
अलग-अलग दुनिया में खो गए।

जो आँगन कभी हँसी से गूँजता था,
आज वहाँ सन्नाटा पसरा है।
माँ की आँखें दरवाज़े पर टिकी हैं,
पिता चुपचाप सब कुछ सहता है।

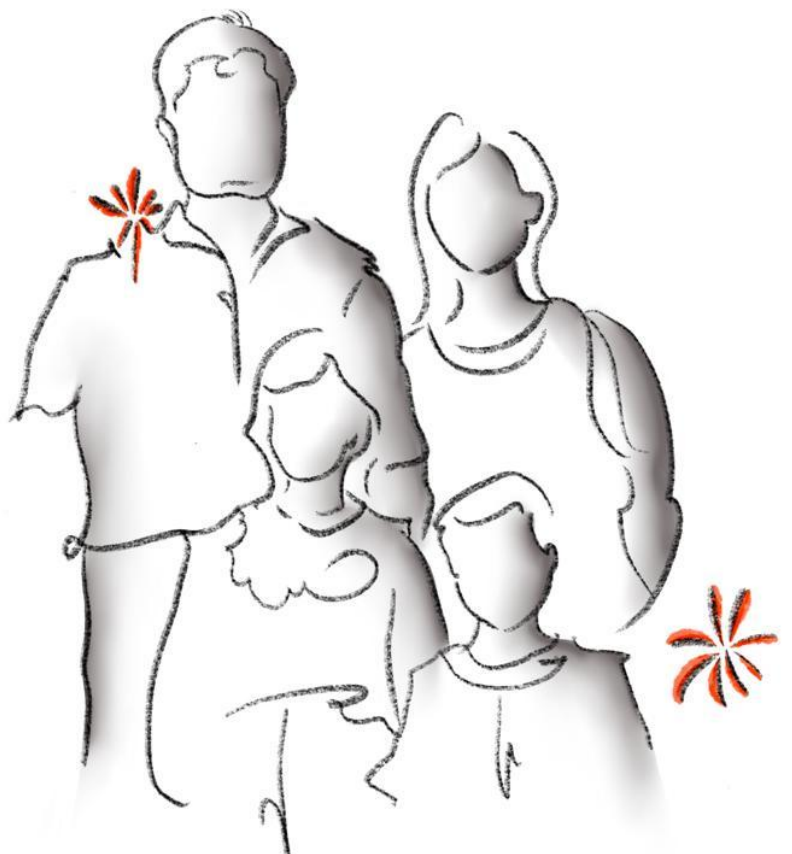
एक रोटी चार टुकड़ों में बँटती थी,
आज थाली पूरी रह जाती है।
जिस घर में शोर कभी कम नहीं होता था,
अब घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है।

वक्त ने कैसा खेल रचाया है,
सब अपने होकर भी दूर हो गए।
एक ही छत के नीचे पलने वाले,
आज अलग-अलग जगहों पर रहने को मजबूर हो गए।

और सच कहूँ तो...
घर आज भी वही है,
बस "घर वाले" कहीं खो गए।

अब त्योहारों में वह रौनक नहीं दिखती,
दीवारें भी जैसे चुप-चुप-सी रहती हैं।

कभी जो छोटी-सी बात पर महफ़िल सज जाती थी,
आज वही बातें याद बनकर आँखें भिगो जाती हैं।
माँ आज भी सबकी पसंद का खाना बनाती है,
पर खाने वाले सब साथ नहीं बैठ पाते हैं।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



मुझे इतना-सा देना

सौम्या, सुपुत्री सुनील धीमान, आई.टी. विभाग

माँ मुझे चूड़ियाँ कम पहनाना,
हिम्मत की आवाज़ पहनाना ।

अपने हिस्से की रोटी खुद सेकूँ,
अपने हिस्से का आसमान भी देखूँ ।

पापा, इतना विश्वास दे जाना,
अपने पैरों पर मुझे खड़ा कर जाना ।

कभी किसी के आगे झुकना न पड़े,
ऐसा स्वाभिमान मेरे भीतर भर जाना ।

एक दिन जब तुम मुस्कुराओगे,
मेरी उड़ान देखकर इतराओगे ।

तब कहना सब से सिर उठाकर -
"हमने बेटी नहीं, हिम्मत पाली है ।"



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



अनमोल रिश्ता

राजेश कुमार, परिचारक, सी.ए.सी. विभाग

बेटियाँ मेरी नन्ही परियाँ,
मेरे जीवन की सबसे प्यारी कड़ियाँ।
उनकी हँसी से घर महक जाता है,
हर दुख मेरा पल में दूर हो जाता है।

जब वे उँगली पकड़कर चलना सीख रही थीं,
मेरी दुनिया उनके संग ही जी रही थी।
उनके छोटे-छोटे सपनों में मैं खो जाता हूँ,
उन्हें मुस्कुराते देख हर गम भूल जाता हूँ।

वे सिर्फ मेरी बेटियाँ नहीं,
मेरा अभिमान हैं,
मेरे दिल की धड़कन,
मेरी पहचान हैं।

उनकी हर खुशी में मेरी खुशी बसती है,
उनकी हर जीत पर मेरी आँखें मुस्कुराती हैं।
कल वे अपने नए घर चली जाएंगी,
फिर उनकी बहुत याद आएगी।

क्या कहूँ मैं उनके बारे में,
एक मुझे माँ-सा दुलार करती है,
वहीं दूसरी डॉक्टर-डपटकर अपना हक जताती है।
पिता और बेटियों का यह रिश्ता अनोखा है,
हर रिश्ते से बढ़कर, सबसे प्यारा है।

रब से बस इतनी दुआ करता हूँ,
उनके जीवन की खुशियों से भर दे।
मेरी बेटियाँ मेरा गर्व, मेरा संसार हैं,
उनके बिना मेरा जीवन सूना-बेकार है।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



एक कल्पना

मोहम्मद उमर, सहायक प्राध्यापक, फ्रैशन प्रौद्योगिकी विभाग

“कितना भी देखूँ मैं तुम्हें,
हसरतें नहीं मिटतीं,
ये इश्क है या जाम है, नशा बढ़ता ही जाता है,
जितना भी देखु मैं तुम्हें...”
“तेरी ये अदा, ये हुस्न की शोखी, और वो तेरा झुमका...
हमारे दिल पे क्या कहर करते हैं...
इनको अलग-अलग... जुदा-जुदा ही रक्खा करो...
साथ मिलके, ये बेपरवाह तबाही करते हैं...”
“यूं अश्क आंखों से निकला ना करो...
जो चला गया उसे निहारा ना करो...
तुम क्या हो उसके लिए...जो था ही नहीं तुम्हारे काबिल...
यूं रो रो के रातें गुजार ना करो...”
“खो गया हूं तेरे इश्क में इस कदर...
याद नहीं रहता अब दिन हो या कोई पहर...
खड़ा हूं कोहि-स्तां (पहाड़) के उरुज (शिखर) पे...
डर लगता है, कहीं जोगी ना हो जाऊं...”
“नैन हैं या कोई तसव्वुर (कल्पना)...
ना खोना था पर...खो ही गया मैं...
ना जाने क्या चाहती हैं, ये आंखें...
मरने को गया...और मर ही गया मैं...”
“मर्ज़ की वजह क्या बयान करें साहब,
आंखें उलट सी जाती हैं,
जुबान लड़-खड़ा सी जाती है,
सांसें तेज़ चलती हैं,
और दिल बेकाबू धड़कता है...
अब कहाँ जाकर इलाज कराएँ,
मर्ज़ की वजह भी वही है, मर्ज़ की दवा भी...”
“खुद से ही बातें हो रही हैं...
वो खुद से कुछ कह रही है
मैं खुद से कुछ कह रहा हूं...
इज़हार-ए-इश्क वाजिब है शायर...
इशारों से इश्क मुक्कमल नहीं होता...”
“उन्हें लगता है, हम नशे में हैं...
आये हाय... क्या बहाना है...
जानती सब हैं उनकी आंखें,
बस कहती...दोष पैमाने का है।”

“इस कदर देखा मैंने उसके चेहरे को
नज़र उतारने में सदियां लग जाएंगी
यू तो बहुत चेहरे हैं इस जहां में
पर मेरे जैसी नज़र कहाँ से लाएंगी”
“बैठे हैं खामोश.. कि लब बोल ना पाए
अब समझ नहीं आ रहा
लगी दिल पे है या दिल लगा बैठे हैं कहीं”
“इस कदर देखा मैंने उसके चेहरे को...
कायनात जलानी पड़ेगी...उसकी नज़र उतारने को”
“मुझे समझना है तो, मेरे पास बैठो
यहाँ-वहाँ की बातें तो, काफिर ही बोलती हैं मुझे”
“क्या मांगा था हमने उनसे
कुछ पल बातों के, उन्हें गौर से देखने का हक...और चंद तिरछी नज़र
बेचारे इतने ग़रीब निकले, नज़रअंदाज़ ही कर दिया...”
“उनको देख के जो सुकून मिलता है...
हमसे ना पूछो कितना तमाम मिलता है
इतनी हसीं-ओ-खुशसूरत हैं वो...
झलक भी मिल जाए, तो बेहिसाब मिलता है...”

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



कांगड़ा : पर्वतों की मौन वाणी

सुमित कुमार,

सहायक प्राध्यापक, (फ़ैशन प्रौद्योगिकी विभाग)

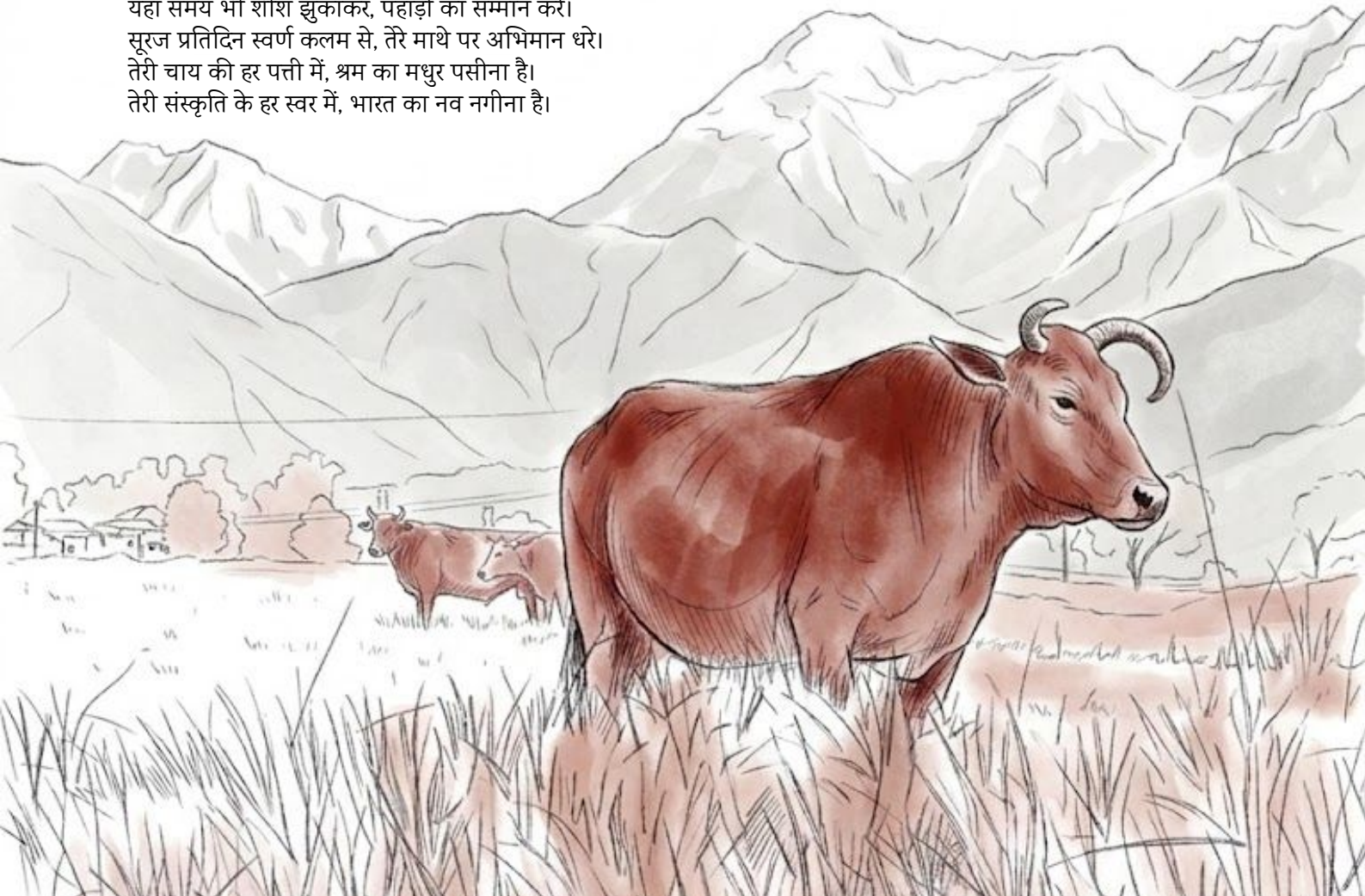
धौलाधार की श्वेत शिराओं में, युगों का इतिहास बहता है।
हर शिला के शांत अधरों पर, एक अमर विश्वास रहता है।
यहाँ हवाएँ केवल चलती नहीं, ऋषियों के मंत्र सुनाती हैं।
देवदार की गंभीर छाया, जीवन का अर्थ सिखाती है।

कांगड़ा!

तू मिट्टी नहीं—एक चेतना है, जो संघर्षों में भी मुस्काती है।
भूकम्पों की पीड़ा सहकर भी, हर बार स्वयं को गढ़ जाती है।
तेरी घाटियों का हर कोना, प्रकृति का अनुपम ग्रंथ बने।
हर झरना जैसे वेद-पंक्ति हो, हर वन उपनिषद् का छंद बने।
यहाँ समय भी शीश झुकाकर, पहाड़ों का सम्मान करे।
सूरज प्रतिदिन स्वर्ण कलम से, तेरे माथे पर अभिमान धरे।
तेरी चाय की हर पत्ती में, श्रम का मधुर पसीना है।
तेरी संस्कृति के हर स्वर में, भारत का नव नगीना है।

कांगड़ा!

तेरी पहचान न सीमाओं से, न केवल मंदिर-दुर्गों से है।
तेरा वैभव उन सरल हृदयों में है, जो प्रेम लिखते हैं पर्वतों से।
जब तक हिम का तिलक रहेगा, जब तक नदियों का गान रहेगा,
भारत की इस पुण्य धरा पर कांगड़ा तेरा मान रहेगा।
तू केवल एक जनपद नहीं, हिमालय की आत्मा का स्वर है;
जो एक बार तुझमें खो जाए, वह जीवन भर तेरा ही घर है।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से

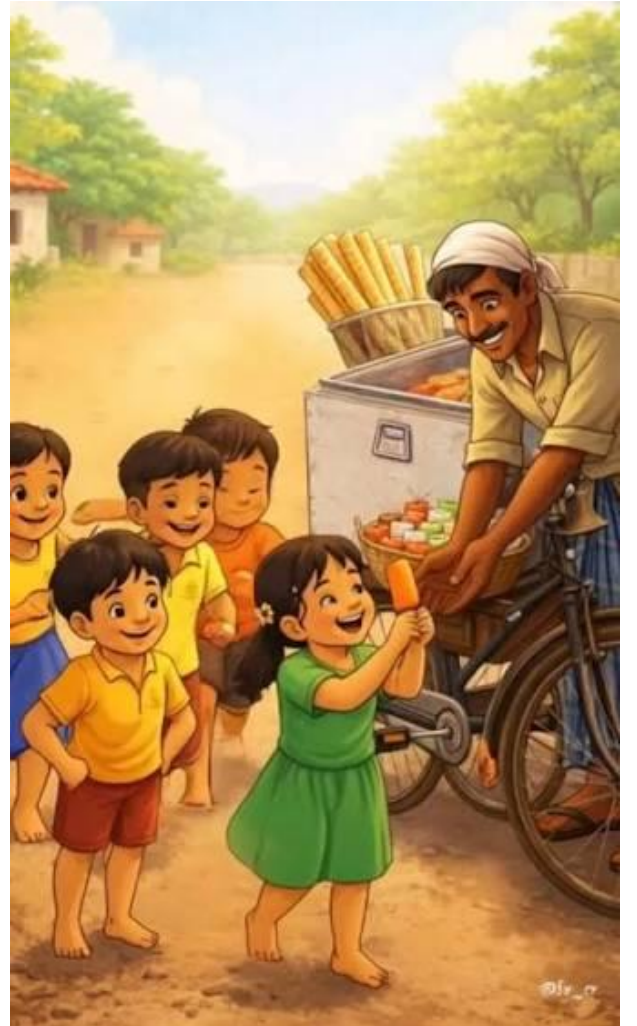
वो सुन्हेरे दिन,

अंजलि गुलेरिया, नर्स, निफ्ट कांगड़ा



ना जाने कहाँ गए वे दिन,
जब न किसी की सोच का डर था,
न किसी की नज़र का कोई असर था।
सुबह आँगन में नंगे पाँव दौड़ते थे,
रसोई से घी में तली पूरियों की खुशबू उठती थी।
रिश्ते सचमुच अपने लगते थे
दादी की गोद, नाना की पुरानी घड़ी की टिक-टिक,
और पड़ोस की आंटी की पुकार भी अपनापन लगती थी।
गर्मियों की छुट्टियों का अपना ही रंग था।
तपती दोपहर में कुल्फी वाले की घंटी सुनकर
हम छत से नीचे झाँकते थे।
नाना-नानी के घर जाने की तैयारी में
टीन के डिब्बे में रखी बर्फी,
बस की खिड़की से आती धूल,
और रास्ते भर आम के बागों की गंध
मन में शीतल बयार-सी भर देती थी।
पचास पैसे भी किसी खज़ाने से कम न लगते थे,
क्योंकि दादी उन्हें अपने पुराने, घिसे-पिटे बटुए से देती थीं।
सिक्कों की खनक के साथ
उनकी उँगलियों की गरमाहट
और दुआओं की मुलायम छुआन भी साथ रहती थी।
माँ की डाँट पड़ने से पहले ही भाग निकलते थे,
और आँगन में रखी मटकी के पीछे
या दादा-दादी की ओट में जा छिपते थे।
अपनी गली का हर घर, हर मोड़, हर रास्ता अपना-सा लगता था।
कच्ची पगडंडियों पर घुटनों तक धूल लगाकर,
नीम की छाँव में कंचे खेलते हुए,
और शाम की मंदिर-घंटी की टन-टन के बीच बेफ़िक्र दौड़ते रहते थे।
घर लौटने की चिंता कम,
कल कौन-सा खेल खेलना है,
इसकी फ़िक्र ज़्यादा रहती थी।
स्कूल जाने के लिए भारी बैग नहीं उठाने पड़ते थे।
एक तख्ती, एक कलम और एक दवात के सहारे ही निकल पड़ते थे।
तख्ती पर खड़िया की किरकिराती लकीरें,
दवात में स्याही की गहरी नीली गंध,
और उँगलियों पर स्याही के छोटे-छोटे दाग भी

किसी जीत की तरह चमकते थे।
अब उस बचपन में लौट जाने को दिल करता है।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से

भावनाओं के रंग

कमलजीत सिंह, सहायक प्राध्यापक, फ्रेशन प्रौद्योगिकी विभाग



जब दिल के सूने आँगन में, उदासी पैर पसारेगी,
तब टूट के बिखरी उम्मीदें, आँखों से अश्रु बहारेगी।

जब थक कर चूर हो जाएगा, कोई अपनी ही लाचारी से,
जब हार चुका होगा राही, जीवन की कठिन सवारी से।

तब जाग उठेगी इंसानियत, भीतर के गहरे सागर में,
हम हाथ बढ़ाकर थामेंगे, जो डूब रहा इस गागर में।

उस दर्द को अपना मानेंगे, जब जाग उठेगी समानुभूति,
हर रोते दिल को मिल जाएगी, तब एक मीठी-सी अनुभूति।

फिर करुणा बनकर बरसेगी, भीगी आँखों की कोर से,
हम बाँधेंगे इस दुनिया को, एक निश्छल, पावन डोर से।

ये पाँचों शब्द नहीं केवल, ये जीने का एक ढंग भी हैं,
इंसान को इंसान बनाते जो, ये रूह के वो रंग ही हैं।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



कितना बदल गया है ज़माना

डॉ. हरीश कुमार बंगा, सहायक प्राध्यापक

पहले था संयुक्त परिवार का ज़माना,
हर शाम होती थीं ज्ञान की बातें।
आज बिखर गए हैं परिवार,
और कम हो गई हैं मुलाकातें।
हर घर में मिलता था मान-सम्मान,
और बड़ों का होता था स्वागत-सत्कार।
अब खो गए वे संस्कार और प्यार,
हर घर में बढ़ गया द्वेष और अत्याचार।
हर गाँव-घर में था भाईचारे का माहौल,
और आपस में बोले जाते थे मीठे बोल।
आज हर कदम पर हो रहा है इज़्ज़त का खेल,
और न रहा कोई रिश्ता अनमोल।
सभी घर-परिवारों में थी एकता,
और चिट्ठियों का था प्रचलन।
आधुनिकता की इस दौड़ में,
कितना व्यस्त हो गया है जीवन।
बहू-बेटियों की होती थी इज़्ज़त,
और हर कदम पर थी मान-मर्यादा।
बढ़ी गरीबी, बेरोज़गारी और असमानता,
साथ ही अधूरा रह गया हर किया हुआ वादा।
पहले मिलकर मनता था हर जश्न,
और आसान था रोटी कमाना।
आज मुश्किल हो गया है परिवार चलाना

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



सपनों के धागे: फैशन डिज़ाइन विभाग को समर्पित

श्री राजेश कुमार धीमान, सहायक प्राध्यापक

जहाँ कपड़ों की सरसराहट गीत बन जाती है,
जहाँ हर स्केच एक नए सपने को जन्म देता है,
वहीं काँपते हाथों से शुरू होता है एक सफ़र,
जो मेहनत की सिलाइयों से बनता है एक सुनहरा मुकदर।

यहाँ दिन घड़ी की सुइयों से नहीं,
सुई-धागे और टाँकों से गिने जाते हैं।
और रातें कब सुबह में बदल जाती हैं,
यह केवल जुनून ही जान पाता है।

फ़र्श पर बिखरे पैटर्न, पिन और धागे,
हर कोना हमारी कहानी कहता है।
काँफी के अधूरे कप और जागती आँखें,
हर संघर्ष का साक्षी बन जाते हैं।

हर कपड़े की तह में छिपी है एक दास्तान,
कभी हार की, कभी उम्मीद की उड़ान।
कई बार हौसले डगमगाए भी सही,
पर हर आँसू ने हमें और मज़बूत ही किया।

ड्रेस फॉर्म हमारी खामोश गवाह बनी,
हमारी हँसी, हमारी थकान और हमारी खुशी की।
हर ज्यूरी, हर प्रदर्शनी, हर रैंप के साथ,
हमने खुद को नए रूप में पाया हर बार।

हमने जाना कि फैशन केवल परिधान नहीं,
यह सपनों, विश्वास और साहस की पहचान है।
हर सिलाई में छिपी होती है मेहनत की कहानी,
हर डिज़ाइन में बसती है एक नई जिंदगानी।

कुछ यादें उन जागी हुई रातों में बस गईं,
कुछ रैंप की रोशनी में हमेशा के लिए चमक गईं।
और कुछ हर परिधान की सिलाई में समा गईं,
जो जीवन भर हमारे साथ चलती रहीं।

यह कक्षा केवल एक कमरा नहीं थी,

यह हमारा दूसरा घर बन गई।
जहाँ अजनबी दोस्त बने,
और दोस्त परिवार में बदल गए।

समय बदलेगा, फैशन बदल जाएगा,
नई सोच और नए संग्रह आएँगे।
पर जो यादें हमने यहाँ सिली हैं,
उन्हें कोई समय कभी मिटा नहीं पाएगा।

हर स्केच, हर डिज़ाइन, हर रंग,
हमारे दिल का एक हिस्सा अपने साथ ले जाएगा।
फैशन डिज़ाइन विभाग हमेशा रहेगा,
हमारी पहचान, हमारा अभिमान और हमारी प्रेरणा बनकर।

तो सलाम उन अनगिनत जागी हुई रातों को,
उन चुनौतियों को, उन संघर्षों को।
और उन हर छात्र-छात्राओं को, जिन्होंने सपने देखने
का साहस किया
क्योंकि हर बेहतरीन परिधान के पीछे,
तुम्हारी मेहनत, तुम्हारा जुनून और तुम्हारी कहानी सिली हुई है।

निफ्ट कांगड़ा परिवार से



यात्रा-वृत्तांत : हिमाचल की वादियों में एक दिन

साहिल, सहायक – एफ.पी. विभाग

सुबह की पहली किरण जैसे ही कांगड़ा की मनमोहक पहाड़ियों पर बिखरी, वातावरण में एक अनोखी ताजगी घुल गई। हवा में देवदार की भीनी-भीनी सुगंध और दूर कहीं किसी पक्षी का मधुर कलरव सुनाई दे रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति स्वयं यात्रियों का स्वागत कर रही हो।

मैंने अपनी यात्रा की शुरुआत धर्मशाला से की। मार्ग घुमावदार था, किन्तु हर मोड़ पर प्रकृति का एक नया रूप दिखाई दे रहा था—कहीं बादलों से आच्छादित पहाड़ियाँ, तो कहीं घाटियों में बिखरी सुनहरी धूप। सड़क के किनारे बहती शीतल हवा पूरे सफ़र को मानो संगीतमय बना रही थी।

मैक्लोडगंज पहुँचते ही बौद्ध मठों की शांति ने मन को गहराई से स्पर्श किया। प्रार्थना-चक्रों की धीमी गति और भिक्षुओं का शांत एवं सौम्य व्यवहार मानो यह संदेश दे रहा था कि जीवन की सबसे बड़ी सुंदरता सरलता और सुकून में निहित है।

दोपहर के समय मैंने भागसू नाग झरने का रुख किया। पहाड़ों के बीच से गिरती जलधारा किसी चित्रकार की अनुपम कृति-सी प्रतीत हो रही थी। जल की शीतलता हथेलियों को छूकर मन तक पहुँच रही थी। वहाँ कुछ पल प्रकृति की गोद में बिताना जीवन के सबसे शांत और सुकूनभरे अनुभवों में से एक था।

शाम होते-होते आकाश गुलाबी आभा से भर उठा। सूर्य धीरे-धीरे पहाड़ों के पीछे ओझल हो रहा था और चारों ओर कोमल स्वर्णिम प्रकाश फैल गया था। उस क्षण ऐसा लगा मानो समय ठहर गया हो—बस मैं था, पर्वत थे और शांत होती प्रकृति।

हिमाचल की यह एक दिन की यात्रा केवल मनोहारी दृश्यों की स्मृतियाँ ही नहीं छोड़ गई, बल्कि जीवन को ठहरकर और गहराई से महसूस करने का संदेश भी दे गई। सच ही है, प्रकृति का सौंदर्य शब्दों में नहीं, बल्कि अनुभवों में बसता है।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



ब्रेन वॉर्स (ए.आई. और मानव बुद्धिमत्ता)

आहाना शर्मा, सुपुत्री, श्री अनिल कुमार शर्मा, लेखा विभाग

कई लेख पढ़ने और यह समझने के बाद कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) कैसे कार्य करती है, यह स्पष्ट होता है कि यह एक भाषा मॉडल पर आधारित प्रणाली है, जिसे मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली से प्रेरित होकर प्रशिक्षित किया जाता है। फिर भी एक प्रश्न बार-बार सामने आता है क्या मानव मस्तिष्क का कोई विकल्प हो सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर आज भी पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। एक ओर एआई को विशिष्ट कार्यों के लिए विशाल मात्रा में उपलब्ध ऑकड़ों के आधार पर प्रशिक्षित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर मानव मस्तिष्क जीवन के अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं और परिस्थितियों से निरंतर सीखता और विकसित होता रहता है। यही विशेषता उसे अद्वितीय बनाती है।

आज हम ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ अनेक लोग यह सोचकर चिंतित हैं कि एआई और रोबोटिक्स उनकी नौकरियाँ छीन लेंगे। किंतु हमें यह भी समझना चाहिए कि जिस मानव बुद्धि ने इन तकनीकों का निर्माण किया है, वही उनको नष्ट भी कर सकता है। इसलिए वास्तविक चुनौती एआई नहीं, बल्कि उसका विवेकपूर्ण उपयोग है।

यदि किसी एआई से यह सवाल पूछा जाए कि चाय कैसे बनाएँ, तो एक अच्छी प्रशिक्षित भाषा में मॉडल इसका जवाब कदम-दर-कदम देगा, और चाहे वही प्रश्न अनेक बार पूछा जाए, तो भी लगभग वही जवाब दोहराएगा। इसके विपरीत, एक मनुष्य केवल विधि ही नहीं बताएगा, बल्कि अपने अनुभव भी साझा करेगा—चाय की सुगंध, स्वाद, उसे बनाने की बारीकियों का भी परिचय देगा और वह बताएगा कि चाय का स्वाद कैसा लगेगा। यही अनुभव और संवेदना मानव को मशीन से अलग बनाते हैं। लेकिन सवाल चर्चा में आता है कि मानव बुद्धि और कृत्रिम बुद्धि की प्रतिस्पर्धा में जीतेगा कौन? यह हमेशा एक बहस का विषय रहेगा कि ए.आई. दुनिया की सबसे शक्तिशाली सत्ता को कैसे पीछे छोड़ सकता है। वर्तमान समय में हममें से अनेक लोग ईमेल लिखने, लेख तैयार करने अथवा अन्य कार्यों के लिए एआई का सहारा लेने लगे हैं। सुविधा प्राप्त करना गलत नहीं है, परंतु अत्यधिक निर्भरता हमारे मौलिक कौशल

को धीरे-धीरे कम कर सकती है। यदि हम प्रत्येक कार्य एआई से ही करवाने लेंगे, तो समय के साथ हमारी सृजनात्मकता, निर्णय-क्षमता और आत्मनिर्भरता प्रभावित हो सकती है। सबसे अच्छे परिणाम तब प्राप्त होते हैं, जब एआई का उपयोग एक सहायक उपकरण के रूप में किया जाए, न कि मानव बुद्धि के विकल्प के रूप में। तकनीक का उद्देश्य हमारी क्षमता को बढ़ाना है, उसे प्रतिस्थापित करना नहीं।

यदि हम संतुलित दृष्टिकोण अपनाएँ, तो एआई और मानव के बीच प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं रहेगी। भविष्य उसी का होगा, जहाँ मानव की रचनात्मकता, अनुभव और संवेदनशीलता का समन्वय कृत्रिम बुद्धिमत्ता की गति, सटीकता और विश्लेषण क्षमता के साथ होगा। वास्तव में, श्रेष्ठता प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि सहयोग में निहित है।

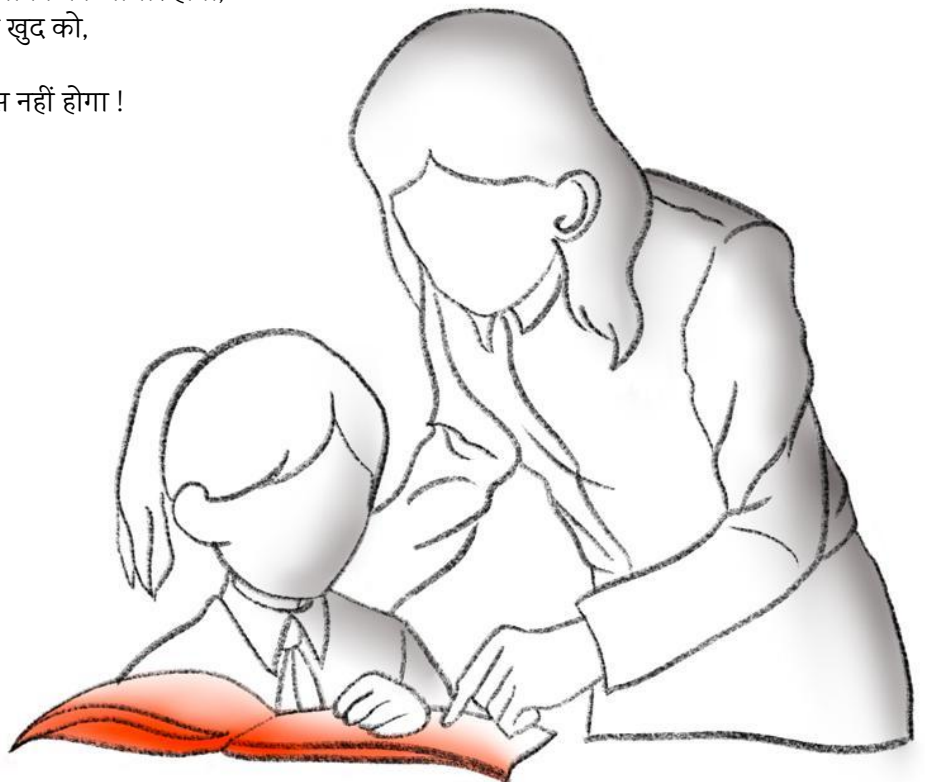
निफ्ट कांगड़ा परिवार से



जीवन का आधार – शिक्षा

डॉ. हरीश कुमार बंगा, सहायक प्राध्यापक

माना कि समय बहुत बदल गया है,
गूगल नॉलेज में अहम चल गया है,
हम भाग-दौड़ भरी ज़िंदगियों में मशगूल है,
दिल का कोना मंजिलों की निगाह पर सिकुड़ गया है,
कौन देता है तवज्जो अब उन्हें भी,
जिनके कारण मुकाम लिखा गया है,
गुरुजी...! यूं तो पुराने ज़माने का अहसास होगा,
गुरु की सीख से हर मुश्किल का सरल आभास होगा,
जिनकी निगाहों में सख्ती और हृदय में नरमी,
गुरु बिन ज्ञान नहीं; कालान्तर में गर्व गुरु से प्रकाश उजास होगा,
ना जाने हम सोने को छोड़कर लोहा क्यों चुनते हैं,
गुरु - शिष्य परम्परा है अनोखी, परन्तु
ऑनलाइन अध्ययन-सामग्री ढूँढने का प्रयास होगा
शिक्षा किताबी मौजू को हल करना नहीं है साहब,
गुरु के चरणों में सीखा सर्वस्व ज्ञान ही जीवन का आधार होगा,
न बांधो पाश्चात्य की दिखावी बेड़ियों से खुद को,
न रहेंगे मूल्य सुरक्षित, विकास तो होगा
पर गुरु बिन अर्जुन एकलव्य सा इतिहास नहीं होगा !



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



डिजिटल दौर की दुनिया

रजत - सहायक , परीक्षा नियंत्रक विभाग

आज की दुनिया स्क्रीन में सिमट गई,
खुशियाँ भी अब ऑनलाइन बिकने लगी।
कभी चिट्ठियों में जो एहसास था,
वह अब इमोजी में दिखने लगा।
रिश्तों की गर्माहट ठंडी सी हुई,
स्पर्श की जगह क्लिक ने ले ली,
भीड़ में भी तन्हा है हर इंसान,
यह कैसी दुनिया हमने चुन ली।
फिर भी उम्मीदों का सूरज है,
हर दिल में रोशनी बाकी है,
बस थोड़ा ठहरकर देखो तो,
ज़िंदगी अभी भी प्यारी है।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



जीवन का चरखा

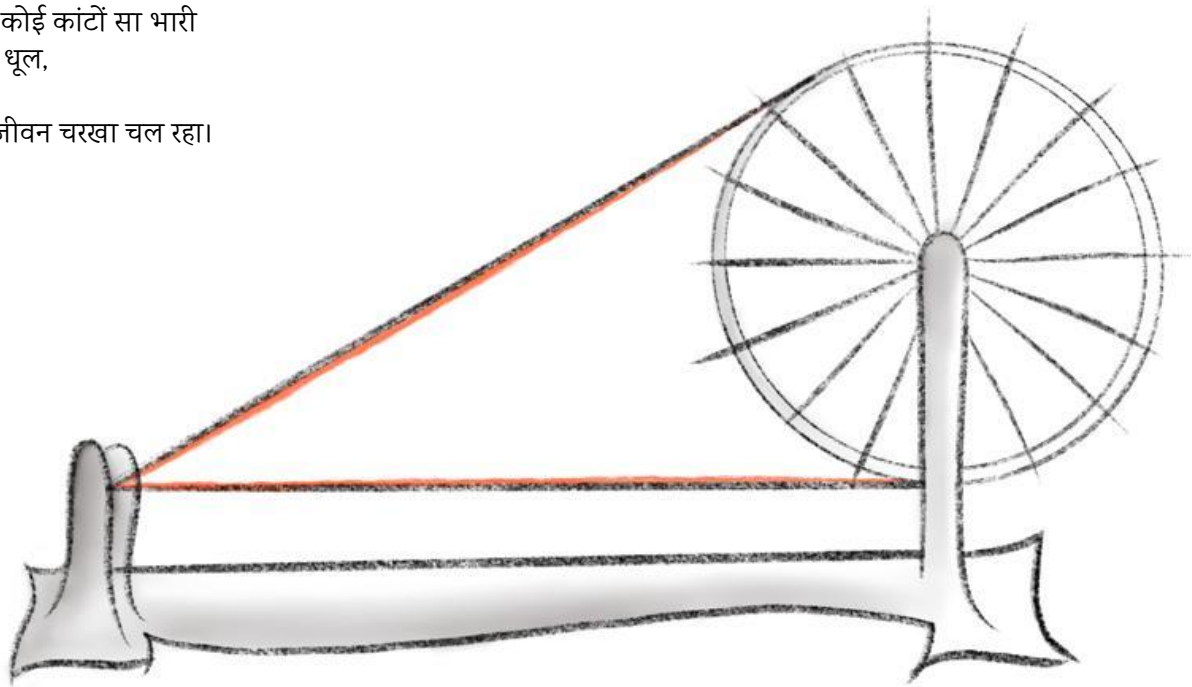
चन्दन कुमार, परिचारक, संसाधन केंद्र

नव-धरा के आँगन में,
जीवन चरखा चल रहा।
कर्मों के धागों से,
लाल दुपट्टा बन रहा।

धागे कहीं उलझ न जाएं,
तनु धागे कहीं टूट न जाएं,
मन में डर ये पल रहा।
नव-धरा के आँगन में,
जीवन चरखा चल रहा।

कई दुपट्टे बन रहे सुंदर,
कईयों की आभा बड़ी मनोहर,
रेशमी दुपट्टा खुद पर इतरा रहा।
नव-धरा के आँगन में,
जीवन चरखा चल रहा।

हर किसी की अलग बुनाई,
कोई रेशम सा कोमल, कोई कांटों सा भारी
अंत सफ़र में होगा सब धूल,
यही रिवाज चल रहा,
नव-धरा के आँगन में जीवन चरखा चल रहा।



निफ्ट कांगड़ा परिवार से



बचपन का जमाना

संदीप धीमान, कनिष्ठ सहायक

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दीवाना था।

खबर न थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था
थक-हारकर आना स्कूल से
पर खेलने ही जाना था।

माँ की कहानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज़ की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था।

हर खेल में साथी था
हर रिश्ता निभाना था
गम की जुबान न होती थी,
न ज़ख्मों का पैमाना था।

रोने की वजह न थी
न हँसने का बहाना था
क्यों हो गए हम इतने बड़े
इससे अच्छा तो वह
बचपन का ज़माना था।

यादों के झरोखे से



निफ्ट से ब्रांड जगत तक का सफ़र

तनुश्री साहदेव,

कम्युनिकेशन डिज़ाइनर | ब्रांड स्ट्रैटेजिस्ट | कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन

कुछ संस्थान हमें केवल शिक्षा देते हैं, जबकि कुछ हमारी सोच और व्यक्तित्व को नई दिशा प्रदान करते हैं। मेरे लिए निफ्ट सदैव दूसरा संस्थान रहा है। यह केवल एक डिज़ाइन संस्थान नहीं था, बल्कि वह स्थान था जहाँ मैंने देखना, समझना, प्रश्न करना और उद्देश्यपूर्ण सृजन करना सीखा।

कम्युनिकेशन डिज़ाइन की छात्रा के रूप में मेरी यात्रा रंगों, टाइपोग्राफी और दृश्य सौंदर्य के आकर्षण से प्रारम्भ हुई। समय के साथ निफ्ट ने मुझे यह समझाया कि डिज़ाइन केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि संवाद की सबसे प्रभावशाली भाषा है। एक उत्कृष्ट डिज़ाइन केवल दिखाई नहीं देता, बल्कि लोगों को सोचने, महसूस करने और किसी विचार से जुड़ने के लिए प्रेरित भी करता है।

निफ्ट में किया गया प्रत्येक प्रोजेक्ट मेरे लिए एक नई सीख लेकर आया। मैंने जाना कि किसी भी समाधान का सृजन करने से पहले लोगों को समझना आवश्यक है। अनुसंधान, डिज़ाइन थिंकिंग, स्टोरीटेलिंग और प्रभावी प्रस्तुति जैसे विषय केवल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं थे, बल्कि वे ऐसी दृष्टि का निर्माण कर रहे थे, जो आज भी मेरे व्यावसायिक जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।

आज जब मैं ब्रांड रणनीति और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन के क्षेत्र में कार्य कर रही हूँ, तब यह और अधिक स्पष्ट रूप से अनुभव करती हूँ कि किसी भी ब्रांड की वास्तविक पहचान केवल उसके लोगो, रंगों या विज्ञापनों से नहीं बनती। उसकी पहचान उसके उद्देश्य, मूल्यों, कार्य-संस्कृति और लोगों के साथ स्थापित विश्वास से निर्मित होती है। एक ब्रांड रणनीतिकार के रूप में मेरा प्रत्येक निर्णय इसी विश्वास पर आधारित होता है कि हर ब्रांड की अपनी एक विशिष्ट कहानी होती है और उस कहानी को प्रभावशाली ढंग से लोगों तक पहुँचाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

वर्तमान समय तीव्र परिवर्तन का दौर है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नई तकनीकों और बदलती उपभोक्ता अपेक्षाओं ने रचनात्मक उद्योगों की कार्यशैली को निरंतर बदलना शुरू कर दिया है।

ऐसे समय में तकनीकी दक्षता जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक मानवीय संवेदनशीलता भी है। निफ्ट ने मुझे रचनात्मकता और रणनीति के बीच संतुलन स्थापित करना सिखाया। इसने कल्पना को उद्देश्य से जोड़ने और डिज़ाइन को केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सकारात्मक प्रभाव का माध्यम बनाने की दृष्टि प्रदान की। जब मैं पीछे मुड़कर अपनी इस यात्रा को देखती हूँ, तो महसूस होता है कि निफ्ट ने मुझे केवल एक डिग्री नहीं दी, बल्कि जीवन को देखने का एक व्यापक दृष्टिकोण दिया। ऐसा दृष्टिकोण, जो हर चुनौती में अवसर खोजता है, हर विचार में एक नई कहानी देखता है और विश्वास करता है कि किसी भी पहचान का निर्माण समय, निरंतरता और सार्थक संवाद से होता है।

आज भी जब मैं किसी नए ब्रांड, अभियान या संचार रणनीति पर कार्य प्रारम्भ करती हूँ, तो मेरे भीतर की वही निफ्ट छात्रा सबसे पहले स्वयं से एक प्रश्न पूछती है "हम यह किसके लिए बना रहे हैं और हम कौन-सी कहानी कहना चाहते हैं?" शायद यही डिज़ाइन का वास्तविक अर्थ है। डिज़ाइन केवल सुंदर वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया नहीं है; यह ऐसी पहचान गढ़ने की कला है, जो लोगों के मन में विश्वास उत्पन्न करे, अनुभवों को अर्थ प्रदान करे और समय के साथ अपनी स्थायी छाप छोड़ जाए। यही निफ्ट की सबसे बड़ी सीख है और यही मेरी व्यावसायिक यात्रा की सबसे मूल्यवान पूँजी।

यादों के झरोखे से



नवा बिहान : एक सोच से सामाजिक परिवर्तन तक की प्रेरणादायक यात्रा

आर. अजय., अध्यक्ष, नवा बिहान, पूर्व छात्र, निफ्ट कांगड़ा

हर बड़ी शुरुआत किसी बड़े संसाधन से नहीं, बल्कि एक छोटे से विचार से होती है। “नवा बिहान” की कहानी भी एक ऐसे ही विचार से शुरू हुई, जिसने समय के साथ हजारों लोगों के जीवन में आशा और आत्मनिर्भरता की नई किरण जगाई।

निफ्ट कांगड़ा के प्रथम बैच (2009-13) के छठे सेमेस्टर का मेरा एक साधारण असाइनमेंट केवल एक शैक्षणिक परियोजना नहीं था। वह एक ऐसी सोच का जन्म था, जिसने डिज़ाइन और समाज सेवा को एक सूत्र में बांधने का सपना देखा। वर्ष 2012 में इसी सोच को एक पहचान मिली और “नवा बिहान” का पंजीकरण हुआ।

वर्ष 2013 में निफ्ट कांगड़ा से “बेस्ट ग्रेजुएशन प्रोजेक्ट” का सम्मान प्राप्त करने के बाद मेरे सामने बहुराष्ट्रीय कंपनियों में आकर्षक करियर के कई अवसर थे। लेकिन मैंने एक अलग रास्ता चुना। मैंने नौकरी की सुरक्षित दुनिया के बजाय समाज सेवा की चुनौतीपूर्ण राह पर चलने का निर्णय लिया। मेरा विश्वास था कि डिज़ाइन केवल फैशन और उद्योग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास और सम्मान पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

मेरे लिये शुरुआती दिन आसान नहीं थे। सीमित संसाधन, आर्थिक कठिनाइयाँ और लोगों तक अपनी सोच पहुँचाने की चुनौती हर कदम पर मौजूद थी। लेकिन झारखंड के आदिवासी शिल्पकारों की पारंपरिक कला और संस्कृति को नई पहचान दिलाने का संकल्प लगातार मजबूत होता गया। मैंने नवा बिहान द्वारा देशभर के डिज़ाइनरों और झारखंड के ट्राइबल आर्टिजंस के बीच एक ऐसा सेतु बनाया, जिसने परंपरा और आधुनिकता को एक साथ जोड़ दिया। वर्ष 2014 में मैंने “डिज़ाइन पाठशाला” की स्थापना की। इसका उद्देश्य झारखंड के आदिवासी छात्र-छात्राओं और रचनात्मक सोच रखने वाले युवाओं को फैशन एवं डिज़ाइन के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना था।

निफ्ट कांगड़ा में चार वर्षों की शैक्षणिक यात्रा के दौरान अर्जित ज्ञान और अनुभव को समाज के युवाओं तक पहुँचाने

का यह एक अभिनव प्रयास था। डिज़ाइन पाठशाला के माध्यम से अनेक विद्यार्थियों को फैशन, टेक्सटाइल, हस्तशिल्प और डिज़ाइन की दुनिया से जोड़ने का कार्य प्रारंभ हुआ।

निफ्ट, फैशन डिज़ाइन और मैनेजमेंट शिक्षा के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी प्रतिष्ठित पहचान और रैंकिंग के लिए जाना जाता है। वहीं से प्राप्त शिक्षा और दृष्टिकोण के आधार पर मैंने लगातार झारखंड के आदिवासी परिधानों, पारंपरिक शिल्प और यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुँचाने के प्रयास में जुटा रहा।

मेरा मानना है कि स्थानीय कला और संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाकर ही वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भरता और सम्मान का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। धीरे-धीरे यह पहल केवल हस्तशिल्प तक सीमित नहीं रही। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, आजीविका, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास जैसे अनेक क्षेत्रों में नवा बिहान ने अपनी पहचान बनानी शुरू की। समाज के वंचित वर्गों के लिए किए गए सकारात्मक और नवाचारपूर्ण कार्यों ने नई संभावनाओं के द्वार खोले। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप मेरा चयन भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), राँची के बिजनेस एक्सीलरेटर प्रोग्राम के लिए हुआ। मुझे झारखंड के प्रतिष्ठित संत जेवियर कॉलेज, राँची के फैशन टेक्नोलॉजी विभाग में जूरी सदस्य के रूप में भी आमंत्रित किया गया।

बारह वर्षों से समाज, शिक्षा, आजीविका और जनजातीय समुदायों के उत्थान के लिए किए गए सतत प्रयासों को देखते हुए ओएनजीसी ने नवा बिहान को अपने सीएसआर कार्यक्रम के लिए पंजीकृत किया और डिजिटल लर्निंग प्रोजेक्ट हेतु सम्मानित किया। आज यह यात्रा एक नए मुकाम पर है, जहाँ झारखंड के जनजातीय शिल्पकार के साथ डोकरा शिल्प और आदिवासी परिधान की फैक्ट्री स्थापित कर उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने का अवसर मिला है। यह साबित करता है कि बड़े सपने, समर्पण और समाज सेवा मिलकर बदलाव की नई कहानी लिखते हैं। आज वर्षों की मेहनत और सामाजिक

प्रतिबद्धता का परिणाम पूरी दुनिया देख रही है। नवा बिहान द्वारा संरक्षित झारखंड की पारंपरिक हस्तशिल्प कला और आदिवासी महिलाओं द्वारा निर्मित मिलेट्स उत्पाद वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। जिन महिलाओं और शिल्पकारों के पास कभी सीमित अवसर थे, वे आज आत्मनिर्भरता और सम्मान के साथ अपने परिवारों और समुदायों के विकास में योगदान दे रहे हैं।

नवा बिहान की यह यात्रा केवल उत्पादों, पुरस्कारों और उपलब्धियों की कहानी नहीं है। यह उन सपनों की कहानी है, जो सीमित संसाधनों के बावजूद हार नहीं मानते। यह उस विश्वास की कहानी है, जो मानता है कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए बड़े साधनों की नहीं, बल्कि बड़े इरादों की आवश्यकता होती है।

आज नवा बिहान देशभर के युवाओं, छात्रों, पेशेवरों और स्वयंसेवकों को समाज सेवा से जोड़ते हुए एक नए सामाजिक आंदोलन का रूप ले चुका है। यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक विचार है—एक ऐसा विचार जो हर व्यक्ति को यह संदेश देता है कि यदि उद्देश्य समाज के उत्थान का हो, तो एक छोटी-सी सोच भी लाखों लोगों के जीवन में “एक नया बिहान” ला सकती है। “सपने तब सच होते हैं, जब वे केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए देखे जाते हैं।”

“नवा बिहान” का यह सफर निफ्ट में बिताए गए चार वर्षों की शिक्षा, असाइनमेंट, प्रेजेंटेशन, औद्योगिक भ्रमण, इंटर्नशिप और विभिन्न प्रोजेक्ट्स के अनुभवों से समृद्ध हुआ है। इस यात्रा को सफल बनाने में निफ्ट के सम्मानित शिक्षकों और मार्गदर्शकों का अमूल्य योगदान रहा है। उनके सही मार्गदर्शन, प्रेरणा और निरंतर सहयोग ने हमें सीखने, आगे बढ़ने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने की शक्ति दी। इस उपलब्धि का पूरा श्रेय उन्हीं को जाता है। मैं उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं और उनके स्नेह एवं विश्वास के लिए विनम्रतापूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

यादों के झरोखे से

सीख, सृजन और यादों का अनमोल सफ़र

प्रिया ज्योति, पूर्व छात्रा (फ़ैशन एवं लाइफ़स्टाइल एक्सेसरीज़, स्नातक बैच 2014)

जब मैं अपने जीवन-यात्रा पर पीछे मुड़कर नज़र डालती हूँ, तो निफ्ट कांगड़ा में फ़ैशन एवं लाइफ़स्टाइल एक्सेसरीज़ विषय का चयन करने और वर्ष 2014 में यहाँ से स्नातक होने के अपने निर्णय के लिए स्वयं को अत्यंत सौभाग्यशाली मानती हूँ। यह केवल एक शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करने का अवसर नहीं था, बल्कि ऐसा अनुभव था जिसने मेरे व्यक्तित्व, रचनात्मक दृष्टिकोण, व्यावसायिक जीवन और सोचने के तरीके को नई दिशा प्रदान की।

हिमाचल प्रदेश के सुरम्य कांगड़ा जनपद में स्थित यह परिसर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण वास्तव में अद्वितीय है। हिमाच्छादित पर्वतों, शीतल एवं स्वच्छ वायु, हरित वनों और मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों से घिरा यह परिसर युवा डिज़ाइनरों के लिए सपने देखने, सृजन करने और स्वयं को निरंतर विकसित करने का आदर्श वातावरण प्रदान करता है। आज भी जब मैं अपने छात्र जीवन को स्मरण करती हूँ, तो वे सुहानी सुबहें, परिसर की शांत पगडंडियों पर बिताए पल और प्रकृति से मिलने वाली प्रेरणा सहज ही मन में जीवंत हो उठती है।

मेरी सबसे प्रिय स्मृतियों में समय-सीमा से पूर्व असाइनमेंट पूर्ण करने की व्यस्तता, स्टूडियो, संसाधन केंद्र और कार्यशालाओं में बिताए गए अनगिनत घंटे, सहपाठियों के साथ नए विचारों पर मंथन तथा उत्साह और हल्की-सी घबराहट के साथ अपने कार्यों की प्रस्तुति शामिल हैं। उस समय जो असाइनमेंट कठिन और चुनौतीपूर्ण प्रतीत होते थे, वही आज मेरी सबसे मूल्यवान यादों का हिस्सा हैं। इन्हीं अनुभवों ने समयबद्ध कार्य-निष्पादन, अनुशासन, सूक्ष्मताओं पर ध्यान तथा दबाव की परिस्थितियों में भी रचनात्मक ढंग से कार्य करने की क्षमता विकसित की। इस संपूर्ण यात्रा को और भी विशेष बनाने में हमारे समर्पित शिक्षकों एवं स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके मार्गदर्शन, धैर्य, प्रोत्साहन और समर्पण ने हमें अपनी क्षमताओं को पहचानने तथा निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। उन्होंने हमें केवल डिज़ाइन के सिद्धांत ही नहीं सिखाए, बल्कि जिज्ञासु बनना, नए दृष्टिकोण से सोचना, प्रश्न करना और नवाचार करना भी सिखाया। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन ने हमें सफल पेशेवर बनने की मजबूत आधारशिला

प्रदान की। शैक्षणिक उपलब्धियों के अतिरिक्त, निफ्ट कांगड़ा ने मुझे जीवनभर साथ निभाने वाली अनमोल मित्रताएँ भी दीं। छात्रावास की आत्मीय बातचीत, देर रात तक चलने वाली परियोजना-चर्चाएँ, संस्थान के विविध आयोजन, उत्सव, शैक्षणिक भ्रमण और हँसी-खुशी से भरे असंख्य पल इन सभी ने मेरे जीवन में अविस्मरणीय अध्याय जोड़े। वे वर्ष केवल शिक्षा प्राप्त करने के नहीं, बल्कि स्वयं को समझने, आगे बढ़ने और जीवनभर संजोकर रखने योग्य यादें अर्जित करने के वर्ष थे। निफ्ट में अर्जित ज्ञान आज भी मेरे व्यावसायिक जीवन का अभिन्न आधार है। चाहे उत्पाद विकास हो, डिज़ाइन सौंदर्यबोध की समझ, शिल्पकला के प्रति सम्मान, रचनात्मक ढंग से समस्याओं का समाधान करना अथवा व्यावसायिक निर्णय लेना हर क्षेत्र में मैं निफ्ट में विकसित दृष्टिकोण और मूल्यों से निरंतर प्रेरणा प्राप्त करती हूँ।

एक दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि निफ्ट कांगड़ा में अध्ययन करना मेरे जीवन के सर्वश्रेष्ठ निर्णयों में से एक था। इस संस्थान ने मुझे उत्कृष्ट शिक्षा, आत्मविश्वास, आजीवन मित्रता, अमूल्य स्मृतियाँ और ऐसी सुदृढ़ नींव प्रदान की, जो आज भी मेरे व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत जीवन को दिशा और शक्ति प्रदान कर रही है। मैं निफ्ट कांगड़ा की संपूर्ण शिक्षण-परंपरा, अपने शिक्षकों, सहपाठियों और इस संस्थान से जुड़े प्रत्येक अनुभव के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। मेरे हृदय का एक हिस्सा सदैव उन पर्वतों, उन कक्षाओं, उन रचनात्मक परियोजनाओं और उन सुनहरे वर्षों से जुड़ा रहेगा, जिन्होंने मुझे आज का व्यक्तित्व बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



अपनी प्रतिक्रिया और अगले अंक में प्रकाशन हेतु प्रविष्टियाँ भेजने के लिए क्यू आर कोड स्कैन करें अथवा हमें ईमेल से संपर्क करें:

hindivibhag.kangra@nift.ac.in

अस्वीकरण

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएँ, विचार, रचनाएँ, चित्र अथवा अन्य सामग्री संबंधित लेखक/लेखिका की मौलिक बौद्धिक संपदा हैं। संबंधित लेखक/लेखिका यह प्रमाणित करता/ करती है कि प्रस्तुत रचना उनकी स्वयं की मौलिक सृजनात्मकता है, और वह किसी अन्य व्यक्ति अथवा स्रोत से नकल (प्लेजियरिज़्म) नहीं की गई है। साथ ही, लेखक/लेखिका यह भी पुष्टि करता/ करती है कि प्रस्तुत सामग्री किसी अन्य पत्रिका, पुस्तक, वेबसाइट या अन्य किसी मंच पर पूर्व-प्रकाशित नहीं है।

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, भावनाएँ, या निष्कर्ष केवल संबंधित लेखक/लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं। ये विचार न तो निफ्ट, संपादकीय मंडल, प्रकाशक और न ही किसी संबद्ध संस्था की आधिकारिक राय अथवा स्थिति को दर्शाते हैं। इस पत्रिका में प्रयुक्त चित्र, छायाचित्र, ग्राफिक्स, स्केच या अन्य दृश्य सामग्री लेखक/लेखिका द्वारा प्रदान की गई हैं, अथवा संस्थान के संग्रह से प्रयुक्त की गई हैं। यदि किसी चित्र अथवा सामग्री पर किसी तीसरे पक्ष का कॉपीराइट लागू होता है, तो उसकी स्वीकृति प्राप्त करना लेखक/लेखिका की नैतिक और कानूनी ज़िम्मेदारी है। ऐसी किसी भी स्थिति में, कॉपीराइट उल्लंघन, साहित्यिक चोरी अथवा बौद्धिक संपदा के किसी अन्य विवाद की पूरी और एकमात्र ज़िम्मेदारी लेखक/लेखिका की होगी। निफ्ट, संपादकीय मंडल, या प्रकाशक इस प्रकार की किसी भी स्थिति में उत्तरदायी नहीं होंगे।

यह पत्रिका केवल एक मंच प्रदान करती है और इसका उद्देश्य रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। अतः प्रस्तुत सामग्री के लिए किसी प्रकार की कानूनी, नैतिक या सामाजिक ज़िम्मेदारी निफ्ट, प्रकाशक या संपादकीय मंडल पर नहीं डाली जा सकती।



राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान

NATIONAL INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY

Ministry of Textiles, Government of India
A Statutory Institute Governed by the NIFT Act 2006